अफ्रीका की लोक कथाऐं–1

अफ्रीका, अंगोला, कैमेरून, मध्य अफ्रीका, कौंगो, मोरोक्को

संकलनकर्ता
सुषमा गुप्ता

Book Title: Africa Ki Lok Kathayen-1 (Folktales of Africa-1)
Cover Page picture: African Drums
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: sushmajee@yahoo.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm
Read More such stories at: www.scribd.com/sushma_gupta_1

Copyrighted by Sushma Gupta 2014
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of Africa

विंडसर, कैनेडा

फरवरी 2018

Contets

सीरीज़ की भूमिका 4
अफ्रीका की लोक कथाऐं–1 5
अफ्रीका की लोक कथाऐं–1 7
1 चालाक बूढ़ा बिल्ला 9
2 पशुओं और पक्षियों की लड़ाई 12
3 गिलहरी और शेर 16
4 तीन चूहे 21
5 बड़ा अंडू और छोटा अंडी 29
मध्य अफ्रीका की लोक कथाऐं 41
6 तैसे के लिये चाल 43
7 तालाब का रक्षक 59
8 ऐनगोम्बा और उसकी टोकरी 65
9 बन्दर और खरगोश 75
उत्तरी अफ्रीका की लोक कथाऐं 83
10 चतुर सँपेरा 85

सीरीज़ की भूमिका

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब **100** साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है।

आज हम ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाऐं अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से बहुत सारी लोक कथाऐं हमने अंग्रेजी की किताबों से, कुछ विश्वविद्यालयों में दी गयी थीसेज़ से, और कुछ पत्रिकाओं से ली हैं और कुछ लोगों से सुन कर भी लिखी हैं। अब तक **1200** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनमें से **400** से भी अधिक लोक कथाऐं तो केवल अफ्रीका के देशों की ही हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब कथाऐं "देश विदेश की लोक कथाऐं" नाम की सीरीज के अन्तर्गत छापी जा रही हैं। ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरे देशों की संस्कृति के बारे में भी जानकारी देंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
मई **2018**

अफ्रीका की लोक कथाऐं–1

संसार में सात महाद्वीप हैं – एशिया, अफ्रीका, उत्तरी अमेरिका, दक्षिणी अमेरिका, अन्टार्कटिका, यूरोप और आस्ट्रेलिया – सबसे पहले सबसे बड़ा और सबसे बाद में सबसे छोटा। इस तरह अफ्रीका साइज़ और जनसंख्या दोनों में एशिया से दूसरे नम्बर पर आता है। अफ्रीका की जनसंख्या 1 बिलियन से ज़्यादा है और उनमें से भी इसमें 50 प्रतिशत जनता 20 साल की उम्र से कम की है। इस तरह से यह दुनियॉ का सबसे ज़्यादा जवानों का महाद्वीप है।

इस महाद्वीप में संसार के सातों महाद्वीपों में सबसे ज्यादा देश हैं – 54 देश। मिश्र, इथियोपिया, यूगान्डा, तनज़निया, केन्या, दक्षिण अफ्रीका, ज़िम्बाब्वे और नाइजीरिया यहॉ के जाने माने देशों में आते है। इस महाद्वीप में संसार का सबसे बड़ा रेगिस्तान भी है – सहारा रेगिस्तान। इसने अफ्रीका का 25 प्रतिशत हिस्सा घेरा हुआ है। इसकी मुख्य नदियॉ हैं नील नदी, ज़ाम्बेज़ी नदी, कौंगो नदी। इसकी मुख्य झील है विक्टोरिया झील जो तीन देशों में बॅटी है – केन्या, यूगान्डा और तनज़ानिया। नील नदी इस विक्टोरिया झील से यूगान्डा के उत्तर की तरफ से निकलती है और उत्तर की तरफ ही चली जाती है। इसका मुख्य पहाड़ है किलिमन्जारो जो तनज़ानिया में है। इसमें तीन ज्वालामुखी चोटियॉ हैं।

इसके इथियोपिया देश को "तेरह महीने की धूप का देश" पुकारा जाता है। इसके लिसोठो देश को "आकाश में राज्य" नाम से पुकारा जाता है।[1] इसके मिश्र देश के पिरामिडों को कौन नहीं जानता। वे संसार के आठ आश्चर्यों में से एक हैं।

बहुत बड़ा होने की वजह से इसमें पूर्व से ले कर पश्चिम तक और उत्तर से ले कर दक्षिण तक बहुत भिन्नता है – खाने में, पीने में, पहनने में, रहने सहने में, लोगों की शक्लों में, भाषा में। पर एक बात सबमें एक सी है कि यहॉ के बहुत सारे देश फुटबाल खेलते हैं। यहॉ की जनसॅख्या में ईसाई और मुसलमान करीब आधे आधे हैं।

इस महाद्वीप का अपना लिखा साहित्य और इसके बारे में लिखा साहित्य और दूसरे महाद्वीपों की तुलना में बहुत कम मिलता है इसी वजह से हमने इस महाद्वीप की लोक कथाऐं हिन्दी भाषा में प्रस्तुत करने का विचार किया है। इस महाद्वीप से हमने 400 से भी अधिक लोक कथाऐं इकट्ठी की हैं। अफ्रीका के 54 देशों में से केवल कुछ ही देशों की ही लोक कथाऐं ज़्यादा मिलती हैं – नाइजीरिया, घाना, मिश्र, ज़ंजीबार, पश्चिमी अफ्रीका, दक्षिणी अफ्रीका, इथियोपिया आदि। इसलिये इन देशों की लोक कथाए इन देशों के नाम से ही दी गयीं हैं। दूसरे, अफ्रीका में नाइजीरिया और घाना देशों की लोक कथाओं में अनन्सी मकड़े, खरगोश और कछुए का अपना एक अलग ही स्थान है इसलिये इन तीनों की लोक कथाऐं भी अलग से ही दी गयीं है।

इन सब देशों की अपनी अपनी लोक कथाऐं है और अपनी अपनी दंत कथाऐं हैं। उदाहरण के लिये नाइजीरिया की योरुबा जनजाति की दंत कथाओं के अनुसार दुनियॉ का पहला आदमी नाइजीरिया के एक शहर इले–इफे में पैदा हुआ था इसलिये दुनियॉ यहीं से शुरू होती है और यहॉ की सभ्यता दुनियॉ की हर सभ्यता से पुरानी है। उधर इथियोपिया में करीब साढ़े तीन मिलियन साल पुराना एक ढॉचा ऐसा मिला है जिससे ऐसा लगता कि दुनियॉ का सबसे पुराना आदमी यहीं था। मिश्र के पिरामिडों को कौन नहीं जानता।

[1] "Land of Thirteen Months of Sunshine" and "Kingdom in the Sky"

इस पुस्तक में अफ्रीका की कुछ ऐसी लोक कथाओं का संग्रह है जिनके बारे में या तो यह निश्चित नहीं है कि वे उसके किस देश की हैं और या फिर वे उन देशों की हैं जिनकी लोक कथाऐं इतनी कम हैं कि उनको किसी अलग पुस्तक में प्रकाशित करना सम्भव नहीं है। इसमें मध्य अफ्रीका और उत्तरी अफ्रीका के सभी देशों को शामिल कर लिया गया है क्योंकि वहाँ की लोक कथाऐं बहुत कम हैं। मिश्र की लोक कथाऐं उस देश के नाम से ही दी गयी हैं।

आशा है कि ये लोक कथाऐं तुम लागों को पसन्द आयेंगी और अफ्रीका के बारे में बहुत कुछ जानकारी देंगी। सो प्रस्तुत है तुम्हारे हाथों में यह अफ्रीका की लोक कथाओं का पहला सग्रह – "अफ्रीका की लोक कथाऐं–1"।

संसार के सात महाद्वीप

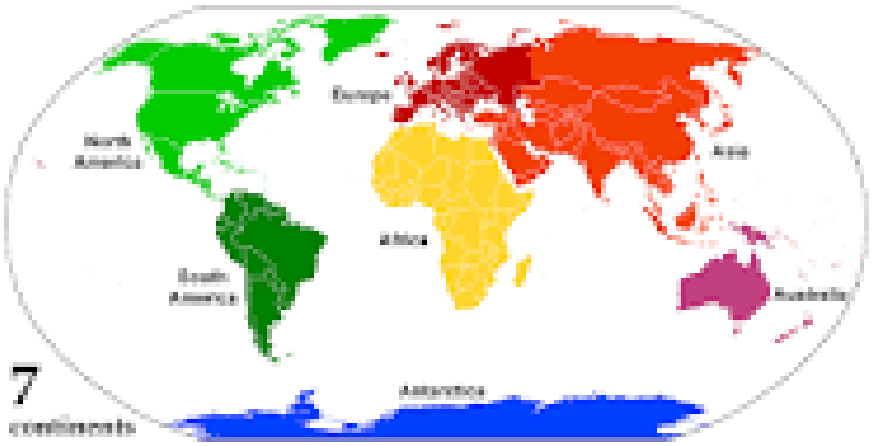

Principal Countries of Africa

North Africa (6)
(1) Algeria (2) **Egypt** (3) Libya (4) Morocco (5) Tunisia (6) Western Sahara

East Africa (8)
(1) Djibouti (2) Eritrea (3) **Ethiopia** (4) Kenya (5) Madagascar (6) Sudan (7) **Tanzania** (8) Uganda

Southern Africa (10)
(1) Botswana (2) Lesotho (3) Malawi (4) Moratius (5) Mozambique (6) Namiba (7) **South Africa** (8) Swaziland (9) Zambia (10) Zimbabwe

West Africa (16)
(1) Benin (2) Burkina Faso (3) Cape Verde (4) Ivory Coast (5) Gambia (6) **Ghana** (7) Guinea (8) Guinea-Bissau (9) Liberia (10) Mali (11) Mauritania (12) Niger (13) **Nigeria** (14) Senegal (15) Sierra Leone (16) Togo and Dahomey

Central Africa (7)
(1) Angola (2) Cameroon (3) Central African Republic (4) Chad (5) Congo (6) Gabon (7) Zaire

Folktales of highlighted countries are given under their own titles.

अफ्रीका की लोक कथाऐं–1

1 चालाक बूढ़ा बिल्ला[2]

एक बार एक समय में अफ्रीका में एक जवान बिल्ला रहता था। वह बहुत तेज़ था, बहुत ताकतवर था और हमेशा ही उसके पास बहुत सारा खाना रहता था। वह वहॉ का सबसे अच्छा चूहे पकड़ने वाला बिल्ला था सो सारे चूहे उससे बहुत डरते थे।

धीरे धीरे वह बिल्ला बूढ़ा हो गया। उम्र के साथ साथ वह शरीर से भी कमजोर होता गया और उसके शरीर की तेज़ी भी खत्म होती गयी। इस वजह से अब उसको कभी कभी खाना भी नहीं मिलता था और उसको भूखे ही रह जाना पड़ता था।

पहले चूहे जब भी उसको आते देखते थे तो भाग जाते थे और छिप जाते थे परन्तु अब जबसे वह बूढ़ा हो गया था तबसे न उनको उससे भागने की जरूरत थी और न ही छिपने की।

अब वह खड़े खड़े देखते रहते, हॅसते रहते। बूढ़ा बिल्ला बेचारा इतना कमजोर हो गया था कि वह उनके पास होते हुए भी उनको नहीं पकड़ सकता था।

एक दिन जब बिल्ला बहुत भूखा था तो उसने अक्लमन्दी से चूहा पकड़ने की सोची। वह एक जगह जा कर अपनी पीठ के बल

[2] Sly Old Cat – a folktale from Africa. Adapted from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=192
Retold by Mike Lockett

बिना हिले डुले लेट गया। उसको ऐसे शान्त लेटा देख कर चूहे उसके पास आये और हॅसने लगे।

चूहों ने सोचा कि "अरे आज बिल्ले को क्या हो गया यह तो हमको पकड़ने की कोशिश भी नहीं कर रहा है।" पर फिर भी बिल्ला न बोला और न हिला।

धीरे धीरे एक छोटी चुहिया उसके पास तक पहुॅच गयी और उसको छू कर तुरन्त ही दूसरे चूहों के पास वापस आ गयी। पर बिल्ले ने सोच रखा था कि आज वह बिल्कुल नहीं हिलेगा सो वह बिल्कुल भी नहीं हिला।

उसको इस तरह शान्त लेटा देख कर चूहों की हिम्मत बढ़ गयी। उनमें से एक चूहा बोला — "लगता है कि यह बिल्ला आज मर गया।"

बस फिर क्या था चूहे धीरे धीरे उसके पास आने लगे। फिर वे एक एक करके उसके शरीर पर चढ़ कर खेलने लगे। वे कभी आगे जाते, कभी पीछे जाते। इस तरह दौड़ते हुए वे हॅस भी रहे थे पर वह बिल्ला न कुछ बोला और न हिला।

एक बार एक चूहा भागते भागते बिल्ले के सिर तक पहुॅच गया और हॅस हॅस कर नाचने लगा "आहा, बिल्ला तो मर गया। आहा, बिल्ला तो मर गया।"

पर तभी बिल्ले ने ऑख खोली और उस चूहे को मुॅह में दबा लिया। दो चूहे उसने अपने दोनों अगले पंजों में पकड़ लिये।

उस रात उन दो चूहों से उसकी खूब अच्छी दावत हुई। अगली कुछ रातों में भी उसने खूब खाना खाया। उसके खाने में वे बेवकूफ चूहे होते थे जो यह सोचते थे कि वह मर गया है और वे उसके पास तक आ जाते थे।

कभी कभी बिल्ले की तरह से झूठ बोलना भी फायदा करता है।

2 पशुओं और पक्षियों की लड़ाई[3]

एक बार की बात है कि एक मुर्गा और एक हाथी पास पास रहते थे। एक दिन हाथी ने मुर्गे की झोंपड़ी का डंडा तोड़ दिया तो मुर्गे ने भी बदले में हाथी की झोंपड़ी में कूड़ा कबाड़ फेंक दिया।

हाथी ने जब अपने घर में इतना सारा कूड़ा कबाड़ देखा तो वह आग बबूला हो गया और बोला — "ज़कारा, इस बात का फैसला तो अब लड़ाई से ही होगा। तुम ऐसे नहीं मानोगे।"

मुर्गा बोला — "ठीक है ठीक है, पर लड़ाई से पहले हम लोग अपने अपने सम्बन्धियों को इस लड़ाई के बारे में तो बता दें।"

सो हाथी ने जंगल के सभी जानवरों को और मुर्गे ने जंगल के सभी पक्षियों को कहला भेजा कि उन दोनों में लड़ाई होने वाली है और सारे जानवर और पक्षी लड़ाई के लिये तैयार हो जायें।

[3] The War Between the Birds and the Beasts (AT 222) – a folktale from Africa

दोनों ओर से लड़ाई की पूरी पूरी तैयारियॉ हो गयीं। जानवरों का कप्तान बना भेड़िया और पक्षियों की कप्तान बना चील।

चील ने शुतुरमुर्ग को पशुओं की सेना को देखने के लिए भेजा। इसी समय भेड़िये ने भी यही सोचा कि पक्षियों की सेना की जॉच की जाये और दोनों एक दूसरे की तरफ चल दिये।

भेड़िया बोला — "कहो जिमिना, क्या तुम्हारी सेना तैयार है?"

शुतुरमुर्ग बोला — "बिल्कुल, और तुम्हारी?"

भेड़िया बोला — "हमारी भी।"

शुतुरमुर्ग बोला — "ठीक है, तुम अपने साथियों को बोलो और मैं अपने साथियों को जा कर बोलता हूँ कि हम सब लड़ाई के लिये तैयार हैं।" और शुतुरमुर्ग वापस अपनी सेना की ओर चल दिया।

जैसे ही शुतुरमुर्ग वापस जाने के लिए मुड़ा तो भेड़िये ने देखा कि शुतुरमुर्ग की टॉगों पर तो बहुत मॉस है। उस मॉस को देख कर उसके मुँह में पानी भर आया।

वह तुरन्त बोला — "जिमिना रुको, क्यों न पहले हम तुम आपस में ही लड़ लें। हममें से जो जीतेगा वह जीत जायेगा।"

शुतुरमुर्ग बोला — "ठीक है, पहले तुम मुझे तीन बार मारो फिर मैं तुम्हें तीन बार मारूँगा।"

भेड़िया अपनी जगह से उठा और उसने शुतुरमुर्ग पर तीन बार वार किया।

"अब मेरी बारी है।" कह कर शुतुरमुर्ग ने अपनी चोंच से भेडिये को नोचा और अपने पंजे भी मारे।

भेड़िया परेशान हो गया और बोला — "तुम्हारी बारी अब खत्म हो गयी।"

शुतुरमुर्ग बोला — "नहीं, अभी मेरी बारी खत्म कैसे हो गयी, यह तो अभी एक ही बार हुआ है। अभी तो मेरे दो बार और बाकी हैं।"

कह कर वह उड़ा और अपनी चोंच से भेड़िये की दोनों ऑखें निकाल लीं। इसके बाद वे दोनों अपनी अपनी सेनाओं में चले गये।

जानवरों ने जब भेड़िये को अन्धा देखा तो पूछा — "भाई भेड़िये, यह क्या हुआ?"

भेड़िया बोला — "वे लोग हमारे साथ अन्याय कर रहे हैं। देखो न उन्होंने मेरे साथ कैसा बरताव किया है।"

यह देख कर सभी जानवरों को बड़ा गुस्सा आया। लड़ाई का ऐलान कर दिया गया और दोनों सेनाऐं आगे बढ़ने लगीं।

चील आगे बढ़ा, उसने मुर्गे को सलामी दी और मुर्गी के कुछ अंडे उठा कर हाथी के सिर पर दे मारे और चिल्लाया — "देखो देखो, हाथी का सिर फूट गया। हाथी का सिर फूट गया।"

जब हाथी ने यह सुना तो अपनी सूँड़ से अपना सिर छू कर देखा और बोला — "हे भगवान, अभी तो मेरा सिर सलामत है।"

उसके बाद चील ने एक रस्सी ली और हाथी के आगे फेंकता हुआ बोला — "देखो देखो, हाथी की सूँड़ कट गयी, देखो हाथी की सूँड़ कट गयी।"

जानवरों ने उस रस्सी को हाथी की सूँड़ समझा और वहाँ से उलटे पैरों भाग खड़े हुए। उन जानवरों के पीछे पीछे और जानवर भी भाग लिये। लड़ाई का मैदान जानवरों से खाली हो गया। बस फिर क्या था मुर्गा जीत गया और हाथी हार गया।

लड़ाई के बाद मुर्गा अपने घर वापस गया। उसने चील को बुलाया और कहा — "शैफ़ो, मैं तुम्हें इस लड़ाई में किये गये काम के लिए कुछ इनाम देना चाहता हूँ। वह यह कि आज के बाद जब भी हमारी पत्नियाँ बच्चे देंगी तो तुम एक बच्चा हर परिवार से ले सकते हो यही तुम्हारा इनाम है।"

अक्लमन्दी से काम लेने पर अपने से ज़्यादा ताकतवर दुश्मन को भी हराया जा सकता है इसलिये ताकतवर दुश्मन के सामने ताकत से नहीं बल्कि अक्लमन्दी से ही काम लेना चाहिये। चील ने अक्लमन्दी से काम लिया तो बड़े बड़े जानवरों को भी हरा दिया।

3 गिलहरी और शेर[4]

एक बार जंगल के जानवरों ने देखा कि शेर उनमें से बहुत से जानवरों को खा गया है और उनके जानवर कम होते जा रहे हैं।

यह देख कर उन्होंने आपस में एक मीटिंग बुलायी और कहा — "देखो भाइयो अगर हम लोग ज़िन्दा रहना चाहते हैं तो हमें अपने बचाव की कोई न कोई तरकीब जरूर सोचनी होगी नहीं तो यह शेर एक दिन हम सबको खा जायेगा।"

एक जानवर बोला — "अगर हम शेर जी को एक जानवर रोज भेज दिया करें तो शायद शेर जी के जानवरों के मारने में कुछ कमी हो जाये।"

ऐसा सोच कर इस मीटिंग के बाद वे सब मिल कर शेर के पास गये। उन्होंने शेर से कहा — "हे जंगल के राजा, हम सब आपसे एक प्रार्थना करने आये हैं। वह यह कि अगर हममें से एक जानवर आपके खाने के लिए रोज सुबह आपके पास आ जाया करे तो बाकी जानवरों को आप छोड़ दें।"

शेर को उनकी यह प्रार्थना पसन्द आयी वह बोला — "ठीक है, मैं ऐसा ही करूँगा।"

---

[4] The Squirrel and the Lion – a folktale from Africa.
[My Note: This story is told by African children but our Indian children also tell and hear this story. The only difference between them is that in Indian story this job is done by a rabbit not by squirrel.]

शेर को उनकी यह प्रार्थना इसलिये भी पसन्द आयी क्योंकि इस तरह उसको तो घर बैठे खाना मिल रहा था और जानवर इसलिये खुश थे कि शेर अब बहुत सारे जानवरों को एक साथ नहीं खायेगा।

सभी जानवर खुशी खुशी अपने अपने घरों को वापस लौट गये और आ कर रोज एक परची निकालने लगे। अब परची से जिस जानवर का भी नाम निकलता उसको शेर के पास सुबह होते ही भेज दिया जाता।

पहली बार भैंसे का नाम निकला सो उसको पकड़ कर शेर के पास भेज दिया गया। दूसरे दिन बारहसिंगे की बारी आयी तो उसको भी पकड़ कर शेर के पास भेज दिया गया।

इस तरह जानवर रोज परची निकालने लगे और शेर को अब रोज घर बैठे ही खाना मिलने लगा। अब उसको शिकार के लिए बाहर नहीं निकलना पड़ता था। शेर भी खुश था और जानवर भी खुश थे।

लेकिन एक दिन यह परची गिलहरी के नाम निकली। जानवरों ने उसे पकड़ा और उसको शेर के पास ले जाने लगे तो गिलहरी बोली — "आप लोग मुझे छोड़ दें मैं अपने आप ही शेर के पास चली जाऊँगी।"

जानवर मान गये और उन्होंने उसको छोड़ दिया। गिलहरी अपने घर चली गयी और अगले दिन दोपहर तक सोती रही।

उधर शेर को बहुत तेज़ भूख लगी थी। वह परेशान सा झाड़ियों के आस पास घूमता रहा और खाने के लिये कुछ कुछ ढूँढता रहा।

तीसरे पहर गिलहरी उठी और शेर की मॉद की तरफ चली। वहॉ जा कर उसने देखा कि शेर तो पागलों की तरह इधर उधर घूम रहा है। उसको यह देख कर बड़ा मजा आया। वह एक पेड़ पर चढ़ गयी और शेर से बोली — "आप इतने परेशान क्यों हैं शेर जी।"

शेर बोला — "मैं सुबह से खाने का इन्तजार कर रहा हूँ और तुम लोगों ने अभी तक मेरे खाने के लिए कुछ भी नहीं भेजा है।"

गिलहरी बोली — "ओह शेर जी, वह ऐसा हुआ कि आज जब हम लोगों ने परची निकाली तो उस परची में मेरा नाम निकला।

मैं आपके लिए शहद भरा प्याला ले कर चली आ रही थी कि रास्ते वाले कुँए के पास मुझे एक और शेर मिल गया। वह मेरे हाथ से शहद का प्याला छीन कर भाग गया।"

शेर तो यह सुन कर गुस्से में भर गया और बीच में ही बात काट कर बोला — "अच्छा दूसरा शेर? मगर वह दूसरा शेर है कहॉ?"

गिलहरी बोली — "वह तो अन्दर कुँए में है पर वह आपसे बहुत ज़्यादा ताकतवर है।"

यह सुन कर तो शेर को और अधिक गुस्सा आ गया और उसके तन बदन में आग सी लग गयी।

वह गिलहरी से बोला — "चलो, मुझे दिखाओ उस शेर को। वह मुझसे ज़्यादा ताकतवर कैसे हो सकता है। मैं अभी मारता हूँ उस शेर को।"

गिलहरी शेर को साथ ले कर उस कुँए तक आयी जिसमें उसने बताया था कि वह दूसरा शेर छिपा हुआ है। शेर ने उस कुँए में झाँका।

कुँए में उसको अपनी परछाईं दिखायी दी तो उसे लगा कि गिलहरी तो सच ही कह रही थी। वहाँ तो सचमुच ही दूसरा शेर उस कुँए में बैठा उसे घूर रहा था।

उसने आव देखा न ताव बस उस शेर पर हमला कर दिया। वह उस कुँए में कूद गया और कूदते ही डूब कर मर गया।

गिलहरी अपने घर वापस चली गयी और जा कर जानवरों से बोली — "मैंने आज शेर को मार दिया है इसलिये आप सब आज से आजाद हैं। अब आप आराम से रहें। मैं अपने घर चली।"

यह सुन कर सभी जानवरों को बड़ा आश्चर्य हुआ वे सब एक साथ बोले "कैसे?"।

तब गिलहरी ने उनको अपनी सारी कहानी सुनायी।

फिर सभी एक साथ बोले — "किसी ने सच ही कहा है अक्लमन्दी ताकत से बड़ी होती है। देखने में छोटी सी गिलहरी ने अपनी अक्लमन्दी से इतने बड़े शेर को मार दिया।"

4 तीन चूहे[5]

एक चूहा नगर था जिसमें तीन अजीब चूहे रहते थे। उनमें से एक चूहा लम्बी टॉगों वाला था, उसको सारे चूहे लम्बू के नाम से पुकारते थे। दूसरा चूहा बहुत मोटा था, उसको सारे चूहे मोटू के नाम से पुकारते थे और तीसरा चूहा बहुत ही छोटा था सो उसका नाम छोटू पड़ गया।

एक बार उन तीनों चूहों ने अपनी किस्मत आजमाने की सोची। इस पर लम्बू छोटू से बोला — "अरे छोटू, तू क्या अपनी किस्मत आजमायेगा, तू तो है ही बहुत छोटा। जा घर में बैठ और अपनी मूँछें सँवार। इतनी बड़ी दुनिया और तू छोटा सा, तू कर ही क्या सकता है।"

[5] Three Rats – a folktale from Africa

इस पर मोटू ने लम्बू भाई की तरफ से बोलते हुए कहा — "हॉ हॉ, तू कर ही क्या सकता है छोटू। जा जा, घर भाग जा।"

पर छोटू गिड़गिड़ाते हुए बोला — "नहीं नहीं, मोटू और लम्बू भाई ऐसा न कहो। मैं भी तुम लोगों के साथ अपनी किस्मत आजमाना चाहता हूँ। मुझे भी अपने साथ ले चलो न। मुझे भी अपनी किस्मत आजमाने दो न।"

सो तीनों चूहे अपनी अपनी किस्मत आजमाने निकल पड़े।

वे तीनों बहुत दूर नहीं जा पाये थे कि उनको एक सरकस दिखायी दिया। उन्होंने पास जा कर देखा तो वह सरकस तो चूहों का ही निकला।

एक चूहा बाहर सरकस के बाहर खड़ा आवाज लगा रहा था — "आओ आओ, दुनियॉ का सबसे लम्बा चूहा देखो, केवल एक पैसे में, आओ, आओ।"

लम्बू बोला — "मुझे पूरा विश्वास है कि इस सरकस का चूहा मुझसे अधिक लम्बा नहीं हो सकता।"

सो उन तीनों ने एक एक पैसा दिया और उस लम्बे चूहे को देखने के लिये उस सरकस में घुस गये। वह दुनियॉ का सबसे लम्बा चूहा तो सचमुच में ही बहुत लम्बा था परन्तु वह लम्बू के बराबर लम्बा नहीं था।

सरकस के मालिक ने जब लम्बू को देखा तो बोला — "तुम हमारे सरकस में क्यों नहीं आ जाते? मैं तुमको दूसरे चूहों से दोगुनी तनख्वाह दूँगा क्योंकि तुम तो हमारे लम्बे चूहे से भी अधिक लम्बे हो।"

नेकी और पूछ पूछ। लम्बू राजी हो गया। उसकी किस्मत अच्छी थी उसको तुरन्त ही नौकरी मिल गयी थी। लम्बू ने अपने दोनों भाइयों को विदा कहा और सरकस में चला गया। छोटू और मोटू अपने सफर पर आगे बढ़ गये।

वे लोग कुछ ही दूर आगे गये थे कि उनको एक और सरकस दिखायी दिया। इत्तफाक से वह सरकस भी चूहों का ही था।

यहाँ एक चूहा सरकस के बाहर खड़ा चिल्ला रहा था — "केवल एक पैसा दो और दुनियाँ का सबसे मोटा चूहा देखो, आओ आओ, जल्दी करो।"

मोटू बोला — "मुझे पूरा विश्वास है कि इस सरकस का चूहा मुझसे अधिक मोटा नहीं हो सकता।" सो दोनों ने यहाँ भी एक एक पैसा दिया और दुनिया का सबसे मोटा चूहा देखने उस सरकस के अन्दर पहुँच गये।

उस सरकस में दुनियाँ का सबसे मोटा चूहा मोटा तो जरूर था पर फिर भी वह मोटू जितना मोटा नहीं था।

मोटू को देख कर सरकस का मालिक मोटू से बोला — "क्या तुम मेरे सरकस में काम करना पसन्द करोगे? मैं तुमको बहुत अच्छे

पैसे दूँगा क्योंकि तुम हमारे सरकस के मोटे चूहे से भी ज़्यादा मोटे चूहे हो।"

मोटू को और क्या चाहिये था, वह राजी हो गया। उसकी भी किस्मत चमक उठी थी।

उसने छोटू को विदा कहा और सलाह दी — "छोटू, तुम अब भी मान जाओ, तुम इतनी बड़ी दुनियॉ में कुछ भी नहीं कर पाओगे। तुम बहुत छोटे हो। घर जाओ और घर जा कर अपनी मूँछें सँवारो।"

"नहीं, मैं भी अपनी किस्मत आजमाऊँगा।" कह कर छोटू अकेला ही अपने सफर पर आगे बढ़ गया।

कुछ दूर जाने पर उसको एक और सरकस मिला। इत्तफाक से वह सरकस भी चूहों का था। वहॉ एक चूहा बाहर खड़ा चिल्ला रहा था — "इधर आओ और एक पैसे में दुनियॉ का सबसे छोटा चूहा देखो।"

छोटू ने सोचा "शायद यहीं मेरी किस्मत यहीं चमकेगी"।

सो उसने अपना आखिरी पैसा उस सरकस वाले को दिया और दुनियॉ का सबसे छोटा चूहा देखने सरकस में चला गया। वहॉ दुनियॉ का सबसे छोटा चूहा तो जरूर मौजूद था परन्तु वह छोटू जितना छोटा चूहा नहीं था।

पर वहॉ कोई भी छोटू को काम देने के लिये आगे नहीं बढ़ा, तो वह बेचारा खुद ही उस सरकस के मालिक के पास गया और बोला — "मैं तो तुम्हारे इस छोटे से चूहे से भी बहुत छोटा हूॅ फिर तुम मझे अपने सरकस में काम क्यों नहीं देते?"

सरकस के मालिक ने उसे घूरा और प्यार से मुस्कुरा कर बोला — "मैं तुमको अपने सरकस में काम नहीं दे सकता। तुम निश्चय ही दुनियॉ के सबसे छोटे चूहे हो क्योंकि मैं खुद ही तुमको बड़ी मुश्किल से देख पा रहा हूॅ।

पर तुम्हारे साथ परेशानी यह है कि तुम सचमुच में ही बहुत छोटे हो। जब मैं सामने खड़ा तुमको ठीक से नहीं देख पा रहा हूॅ तो जनता तुमको कैसे देख पायेगी? और जनता अपना पैसा ऐसी चीज़ों को देखने में खराब नहीं करेगी जिसे वह ठीक से देख ही न सकती हो।"

बेचारा छोटू दुखी सा अपनी पूॅछ हिलाता हुआ खाली जेब वहॉ से चल दिया। वह सोचता जा रहा था कि उसके दोनों भाई ठीक ही कह रहे थे कि "छोटू, तू दुनियॉ में कुछ नहीं कर सकता, जा घर जा कर अपनी मूॅछें सॅवार।"

पर फिर भी वह सड़क के किनारे किनारे धीरे धीरे चलता जा रहा था कि शायद कहीं कभी कुछ हो जाये।

चलते चलते अॅधेरा होने लगा था और छोटू को अब भूख भी लग आयी थी। इतने में उसे सामने एक किला दिखायी दिया।

उसने सोचा यहाँ तो खाने पीने को खूब मिलेगा सो उसने उस किले के अन्दर जाने का विचार किया।

उस किले में अन्दर जाने के लिये बहुत सारे छेद थे सो एक छोटे से छेद में से हो कर छोटू किले के अन्दर पहुँच गया। उसने वहाँ खूब खाया और खूब बिगाड़ा।

जब वह खा बिगाड़ कर खूब थक गया तो उसने चारों तरफ निगाह दौड़ायी। एक कोने में उसको एक सुनहरा गोला दिखायी दिया जिस पर बहुत सारे कीमती हीरे जवाहरात जड़े हुए थे और जो बहुत चमक रहे थे।

वास्तव में वह एक अंगूठी थी पर छोटू यह बात नहीं जानता था। उसने उसे खेलने की चीज़ समझा और उसने उससे खेलना शुरू कर दिया। वह उसे कभी इधर लुढ़काता तो कभी उधर। अंगूठी भारी थी, छोटू को उसको लुढ़काने के लिये काफी ज़ोर लगाना पड़ रहा था।

परन्तु उसकी चमक उसको अच्छी लग रही थी कि यकायक वह अंगूठी और छोटू दोनों ही एक छेद से बाहर गिर पड़े।

"ओह, मेरी खोयी हुई अंगूठी।" मीठी सी आवाज में किसी ने कहा। छोटू की तो बस जान ही निकल गयी जैसे। उसने उस अंगूठी को किसी स्त्री को उठाते हुए देखा तो वह वहाँ से डर के मारे भागा।

पर उस स्त्री ने पुकारा — "रुको रुको, छोटे चूहे, तुम भागो नहीं, यहाँ आओ मेरे पास। मैं तुमको सजा नहीं दूँगी। मैं तो अपनी इस अंगूठी के पा जाने के बदले में तुम्हें धन्यवाद देना चाहती हूँ। बोलो मैं तुम्हारे लिये क्या करूँ?"

यह सब सुन कर चूहे का डर भाग गया। वह उस स्त्री के पास आ कर बोला — "मैं नहीं जानता, मैं तो अपनी किस्मत बनाने निकला था।"

वह स्त्री बोली — "किस्मत बनाने के लिये तुम अभी बहुत छोटे हो छोटे चूहे। पर अगर तुम इतने छोटे न होते तो मुझे मेरी अंगूठी कैसे मिलती। मेरी यह अंगूठी बहुत कीमती है इसलिये इसे खोजने के बदले में मैं तुमको इनाम दूँगी। तुम कहाँ रहते हो?"

छोटू बोला — "चूहा नगर की चूहा गली के चूहा घर में।"

स्त्री बोली — "ठीक है, तुम घर जाओ। जब तक तुम घर पहुँचोगे तुम्हारी किस्मत तुम्हारा इन्तजार कर रही होगी।"

छोटू को वहाँ से अपने घर का रास्ता ढूँढने में पूरे दो दिन लग गये। जब वह घर पहुँचा तो उसकी माँ दरवाज़े पर खड़ी थी।

माँ बोली — "मेरे बेटे, तुम्हारी किस्मत तो बन चुकी है। तुमने अपने भाइयों को हरा दिया है। सोने के सिक्कों से भरे दो थैले तुम्हारे लिये आज ही आये हैं। हम अब आराम से ज़िन्दगी गुजारेंगे।"

और छोटू घर में बैठ कर अपनी मूँछें सँवारने लगा। छोटू ने सब्र किया और हिम्मत नहीं हारी थी उसी का फल उसको मिला था।

5 बड़ा अंडू और छोटा अंडी[6]

एक गॉव में एक आदमी रहता था जिसके दो पत्नियॉ थीं। इत्तफाक से दोनों पत्नियों ने एक ही दिन दो बेटों को जन्म दिया। एक ने सुबह को, और दूसरी ने तीसरे पहर को।

सुबह पैदा हुए बेटे का नाम रखा गया अंडू बाबा, और तीसरे पहर में पैदा हुए बेटे का नाम रखा गया अंडी करामी।

जन्म के दिन से ही वे दोनों बिल्कुल एक जैसे लगते थे और एक साथ ही रहते थे। जब वे जवान हो गये तो उनके पिता ने उनके लिये दो अलग अलग मकान बनवा दिये।

अंडू बाबा के मकान के आगे लगा डुरूमी का पेड़, और अंडी करामी के मकान के आगे लगा चेदिया[7] का पेड़।

कुछ दिनों के बाद अंडी करामी की मॉ मर गयी तो उसके पिता ने उसको अंडू बाबा की मॉ की देखभाल में रख दिया। उस दिन से तो वे दोनों हर समय एक साथ ही रहने लगे। यहॉ तक कि कोई एक दूसरे के बिना खाना भी नहीं खाता था।

जब वे कुछ और बड़े हो गये तो उनके पिता ने उन दोनों की शादी कर दी, और वह भी एक ही दिन। जब शादी की रस्में खत्म

[6] Elder Andee and Younger Andoo – a folktale from Africa

[7] Both Durumi and Chedia are the trees of Africa.

हो गयीं तो अंडी करामी बातें करने के विचार से अंडू बाबा के घर गया।

वे दोनों रात गये तक बातें करते रहे। बाद में अंडू बाबा बोला — "अंडी, अब काफी समय हो गया है अब तुम अपने घर जाओ। चलो, मैं तुम्हें तुम्हारे घर छोड़ आता हूँ।"

अंडी करामी बोला — "कमाल है, हम और तुम इतनी बढ़िया बातें कर रहे हैं और तुम कहते हो कि मैं घर चला जाऊँ।"

अंडू बाबा बोला — "बुरा न मानो अंडी, मैं तो तुम्हारी पत्नी के बारे में सोच रहा था। मैं नहीं चाहता कि वह तुमसे रूठ कर मेरे बारे में यह कहे कि मैं फालतू आदमी तुमको उससे दूर रखता हूँ। इसलिये चलो, घर चलो।"

अंडी को यह बात समझ में आ गयी और वह जाने के लिये तैयार हो गया। अंडू बाबा अंडी को घर तक छोड़ने गया, मगर वह खुद अंडी के घर बैठ गया और फिर वहाँ वे दोनों रात भर बातें करते रहे। सारी रात बीत गयी थी परन्तु उनकी तो बातें हीं खत्म होने पर ही नहीं आ रही थीं। लग रहा था जैसे वे बरसों बाद मिले हों।

अंडी करामी ने अपनी पत्नी से कहा — "मुझे थोड़ा पानी दो, मैं हाथ मुँह धो कर अंडू बाबा के घर जा रहा हूँ।" अंडी करामी की

पत्नी ने उसको पानी ला दिया और अंडी करामी हाथ मुँह धो कर अंडू बाबा के साथ उसके घर चला गया।

लेकिन जब वे अंडू बाबा के घर आ गये तो अंडू बाबा ने फिर उसे चेतावनी दी — "देखो, औरतों को अक्ल कम होती है, उनके दिमाग में सन्तुलन की भी कमी होती है इसलिये तुमको घर पर ही अधिक समय बिताना चाहिये नहीं तो तुम्हारा अपनी पत्नी से झगड़ा हो जायेगा।"

उस दिन के बाद से अंडी करामी सोता तो अपने घर में था परन्तु सुबह शाम अंडू बाबा के घर जरूर जाता था और वे दोनों साथ ही खाना खाते थे। पर अंडू बाबा की पत्नी को भोजन का यह हिस्सा बॉट अच्छा नहीं लगता था।

एक दिन उसने अपने पति के लिये एक खास पकवान बनाया और जैसे ही अंडू बाबा उसे खाने बैठा कि अंडी करामी आ गया। अंडू बाबा बोला — "आओ आओ, बड़े मौके से आये हो, आओ तुम भी मेरे साथ ही खाना खा लो।"

लेकिन अंडी करामी को यह देख कर बिल्कुल भी अच्छा नहीं लगा कि अंडू बाबा उसके बिना ही खाना खा रहा था। उसने बहाना बनाते हुए कहा — "मैंने अभी दवा खायी है इसलिये मैं अभी कुछ नहीं खा सकता, तुम खाओ।"

अंडी करामी वहॉ कुछ देर बैठ कर जल्दी ही अपने घर वापस चला गया और अपने एक नौकर से अपना घोड़ा सजाने को कहा।

जब सब कुछ तैयार हो गया तो वह घोड़े पर बैठ कर अंडू बाबा के घर गया और बोला कि वह यात्रा पर जा रहा है।

अंडू बाबा ने पूछा — "लेकिन तुम जा कहाँ रहे हो?"

अंडी करामी बोला — "मुझे खुद ही नहीं पता कि मैं कहाँ जा रहा हूँ, पर जिस दिन भी मेरे चेदिया के पेड़ की पत्तियाँ झड़ें तो तुम समझ लेना कि मैं इस दुनियाँ में नहीं हूँ।"

अंडू बाबा बोला — "क्या सचमुच ऐसा है?"

अंडी करामी बोला — "हाँ सचमुच ही ऐसा है।" और यह कह कर अंडी करामी ने अपने घोड़े की लगाम सँभाली और अपनी यात्रा पर चल दिया।

अंडी करामी और उसका नौकर अभी कुछ ही दूर गये थे कि उनको एक आलूबुखारे का पेड़[8] दिखायी दिया जिस पर दो आलूबुखारे लगे हुए थे।

वह अपने नौकर से बोला — "तुम वह दो आलूबुखारे देख रहे हो न? उनमें से एक आलूबुखारा तुम तोड़ लो और दूसरा उसके लिये छोड़ दो, शायद वह कभी इधर आ निकले।"

[8] Translated for the word "Plum" – see the picture of a plum tree above.

नौकर ने उनमें से एक आलूबुखारा तोड़ लिया। अंडी करामी ने आधा आलूबुखारा खुद खाया और आधा अपने नौकर को दे दिया।

चलते चलते रात हो गयी थी इसलिये रात बिताने के लिये वे लोग एक शहर में रुके। वहॉ एक शीनट[9] का पेड़ लगा हुआ था।

उसमें दो शीनट लगे थे। सो उसमें से उसने एक शीनट तोड़ लिया, आधा खुद खाया और आधा अपने नौकर को दे दिया, और दूसरा शीनट अंडू बाबा के लिये उसी पेड़ पर छोड़ दिया।

शहर में जिस घर में उन्होंने खाना खाया उस घर के मालिक ने शाम के खाने के लिये चार मुर्गे मारे थे।

जब वह उनको अंडी करामी के पास लाया तो उसने उन मुर्गों में से दो मुर्गे उसे वापस कर दिये और कहा — "आप मेहरबानी कर के इन्हें मेरे लौटने तक बचा कर रखें।"

अगले दिन अंडी करामी अपनी यात्रा पर फिर से निकल पड़ा। दूसरे दिन वे जिस घर में रुके वहॉ उनके लिये एक भेड़ मारा गया।

वहॉ भी उसने आधा भेड़ वापस करके घर के मालिक से कहा — "मेहरबानी करके आप इसे मेरे लौटने तक बचा कर रखें।"

[9] Shea Nut tree is found in Africa. Its nut is used to extract cooking oil. See its picture above.

तीसरे दिन वे जिस शहर में रुके वहॉ एक कुँए में एक आदमी खाने वाला राक्षस रहता था। वहॉ के लोग उसे खुश करने के लिये साल में एक बार खाने के लिये एक लड़की दिया करते थे।

इस शहर में वे एक बुढ़िया के घर ठहरे। अंडी करामी ने घोड़े को खोल कर उसे एक पेड़ से बॉध दिया और बुढ़िया से एक बालटी मॉगी ताकि वे अपने घोड़े को कुँए से ला कर पानी पिला सकें।

बुढ़िया बोली — "बेटा, तुम नहीं जानते कि तुम क्या कह रहे हो। उस कुँए में तो एक आदमखोर राक्षस रहता है। हर साल हम लोग उसको एक लड़की खाने के लिये देते हैं।

अगर हम ऐसा न करें तो हमें पानी नहीं मिल सकता और इस समय तो हम लोग घर से बाहर बिल्कुल भी नहीं निकल सकते।"

अंडी बोला — "मॉ जी, आप मुझे बालटी तो दीजिये। उस राक्षस को मैं देख लूँगा।"

अंडी करामी बुढ़िया से बालटी ले कर कुँए की ओर चल दिया। उस दिन उस राक्षस को देखने की गॉव के सरदार की बेटी की बारी थी सो सरदार की बेटी वहॉ बैठी उस राक्षस का इन्तजार कर रही थी।

अंडी करामी ने अपनी बालटी पानी निकालने के लिये कुँए में डाली तो उसे लगा कि किसी ने उसकी बालटी पकड़ ली है।

अंडी करामी बोला — "जो कोई भी कुँए के अन्दर हो वह मेरी बालटी छोड़ दे और यदि वह मुझसे लड़ना चाहता है तो बाहर आ कर लड़े।"

कुँए में राक्षस था। वह वहीं से बोला — "ठीक है, तुम अपनी बालटी खींच लो। पर यह सोच लो कि बालटी के पीछे पीछे मैं भी बाहर आ रहा हूँ। तुम्हारी भलाई इसी में है कि तुम यहाँ से चले जाओ।"

अंडी करामी ने अपनी बालटी ऊपर खींच ली और तलवार निकाल कर राक्षस से लड़ने को तैयार हो गया। जैसे ही राक्षस का सिर कुँए के बाहर आया तलवार के एक ही झटके से उसने उसका सिर काट दिया।

राक्षस का सिर कटा शरीर तुरन्त कुँए में गिर पड़ा। उसका शरीर कुँए में गिरने से कुँए में एक ज़ोर की आवाज हुई और कुँए का पानी उछल कर सारे शहर में बिखर गया।

राक्षस को मारने के बाद अंडी करामी ने उसकी पूँछ भी काट ली। उसने सरदार की बेटी को वापस उसके घर भेज दिया।

नौकर को पानी ले कर बुढ़िया के पास भेज दिया और वह खुद राक्षस का सिर व पूँछ ले कर घर चल दिया। सुबह होने पर लोगों ने देखा कि सारे शहर में तो पानी फैला पड़ा है।

इतने में सरदार की बेटी ने भी अपने पिता को इस अजनबी के बारे में सब कुछ बता दिया।

सरदार बोला — "तुमको छोड़ कर वह अजनबी फिर कहॉ चला गया?"

सरदार की बेटी बोली — "वह तो बुढ़िया के घर ठहरा है।"

सरदार ने अपने नौकर से कहा कि वह उसको तुरन्त ही उसके घर ले कर आये।

अंडी करामी ने सरदार के नौकर से पूछा — "मैं तो कल रात ही यहॉ आया हूँ, सरदार को कैसे मालूम हुआ कि मैं यहॉ हूँ?"

नौकर बोला — "यह न सोचिये। सरदार ने आपको बुलाया है सो मेहरबानी करके आप हमारे साथ चलें।"

इधर अंडी करामी सरदार के घर जा रहा था और उधर सरदार के घर में शादी की तैयारियॉ हो रही थीं।

जैसे ही वह सरदार के घर पहुँचा, सरदार बोला — "अपनी बेटी की जान बचाने के लिये मैं तुम्हारा बहुत आभारी हूँ और इसके लिये मैं तुमको "यारीमा"[10] का "खिताब"[11] देता हूँ।"

और फिर उसने अपनी बेटी का हाथ उसके हाथ में दे दिया। दोनों की शादी हो गयी और वे दोनों सरदार के दिये हुए एक घर में रहने लगे।

कुछ समय बाद एक खास तरह की चिड़िया का एक झुंड उस शहर में आया तो यह समाचार सरदार के महल में पहुँचा। सरदार ने

[10] Yarima – a title in that society

[11] Translated for the word "Title"

अपने लोगों को हुकुम दिया — "जल्दी जाओ और उन चिड़ियों को उड़ा दो।"

अंडी करामी ने जब यह सुना तो वह भी दूसरे घुड़सवारों के साथ वे चिड़ियें उड़ाने चल दिया।

उन सबके आते ही चिड़ियों का वह झुंड पहाड़ी की तरफ उड़ चला। अंडी करामी भी उनके पीछे पीछे चल दिया। पहाड़ी के पास पहुँचते ही वहाँ एक रास्ता खुल गया और वे चिड़ियाँ उस रास्ते में से हो कर पहाड़ी के अन्दर उड़ चलीं।

अंडी करामी घुड़सवारों में सबसे आगे था। वह भी उसी रास्ते से उनके पीछे पीछे चलता गया। उसके अन्दर जाते ही पहाड़ी में बना वह रास्ता अपने आप ही बन्द हो गया।

दूसरे घुड़सवार उससे बहुत पीछे थे। वे जब तक पहाड़ी के पास तक पहुँचे पहाड़ी वाला रास्ता बन्द हो चुका था। वे नाउम्मीद हो कर घर वापस लौट आये। घर पर भी उन्होंने अंडी करामी को कहीं नहीं देखा तो वे बोले "यारीमा मर गया, यारीमा मर गया"।

इसी समय अंडी करामी के घर के सामने लगे चेदिया पेड़ की शाख से एक पत्ती गिरी। अंडू बाबा उधर से ही जा रहा था। उसने चेदिया के पेड़ की पत्ती गिरती देखी तो बोला — "लगता है अंडी करामी अब नहीं रहा, जल्दी से मेरा घोड़ा तैयार करो।" और तुरन्त ही वह भी यात्रा पर चल दिया।

चलते चलते वह भी उसी आलूबुखारे के पेड़ के पास आया जिस पेड़ पर अंडी करामी ने अंडू बाबा के लिये एक आलूबुखारा छोड़ा था। उसने देखा कि आलुबुखारा सूख गया था। उसने समझ लिया कि अवश्य ही वह आलूबुखारा अंडी करामी ने उसके लिये छोड़ा होगा।

आगे चलने पर उसे एक शीनट का पेड़ मिला। वहॉ से भी उसने अंडी करामी का छोड़ा हुआ एक शीनट तोड़ा और बोला — "लगता है कि यह शीनट भी अंडी करामी ने मेरे लिये ही छोड़ा होगा।"

अब अंडू बाबा पहले गॉव में उसी घर में रुका जिसमें अंडी करामी रुका था। दोनों की सूरत बहुत मिलती जुलती थी सो घर के मालिक को लगा कि अंडी करामी वापस आ गया।

घर का मालिक बोला — "अजनबी, तुम वापस आ गये? हमने तुम्हारे लिये अभी भी वे दोनों मुर्गे रख छोड़े हैं।" कह कर वह दोनों मुर्गे ले आया जो अंडी करामी छोड़ गया था।

अगले शहर में भी यही हुआ। अंडी करामी की रखी आधी भेड़ भी अंडू बाबा को मिल गयी।

अन्त में अंडू बाबा उस शहर में पहुँचा जहॉ अंडी करामी ने राक्षस मारा था। उसको देखते ही लोग बोले — "यारीमा आ गया, यारीमा आ गया"।

सरदार ने सुना तो अपने नौकरों द्वारा उसे अपने घर बुलवाया। अंडू बाबा का "यारीमा" के रूप में उस महल में स्वागत किया गया।

अगले दिन वे चिड़ियॉ फिर आयीं। सरदार ने फिर घुड़सवारों को उन चिड़ियों के पीछे भेजा। इस बार अंडू बाबा भी उनके साथ चल दिया।

चिड़ियॉ जब पहाड़ी के पास पहुँचीं तो वहॉ उस दिन की तरह फिर से रास्ता खुल गया और वे उस रास्ते से अन्दर चली गयीं और रास्ता बन्द हो गया।

यह देख कर अंडू बाबा ने पहाड़ी पर अपनी तलवार से वार किया और पहाड़ी में रास्ता खुल गया। लो, उस पहाड़ी में से तो अंडी करामी बाहर निकल आया।

बाहर निकल कर अंडी करामी बोला — "मैं अंडी हूँ राक्षस को मारने वाला।"

उधर अंडू खुशी से चिल्लाया — "और मैं अंडू हूँ पहाड़ी को खोलने वाला।" दोनों भाई एक दूसरे से लिपट गये और खुशी खुशी सरदार के महल को वापस आये।

सरदार ने जब दोनों को देखा तो बोला — "यह तुम्हारा भाई होगा।"

अंडी बोला — "जी हॉ, यह मेरा बड़ा भाई है।"

सरदार बोला — "यदि ऐसा है तो मैं इसको "गलाडीमान गारी"[12] का खिताब देता हूँ। और यारीमा, तुम घर जा कर अपनी पत्नी से मिलो वह कबसे तुम्हारी प्रतीक्षा कर रही है।"

फिर वे दोनों भाई वहीं रहने लगे और अपने घर ही नहीं गये।

[12] Galadiman Gari

मध्य अफ्रीका की लोक कथाऐं

6 Countries of Central Africa
(1) Cameroon (2) Central African Republic (3) Congo (4) Equatorial Guinea (5) Gabon (6) Zaire

6 तैसे के लिये चाल[13]

यह लोक कथा मध्य अफ्रीका के कैमेरून देश की है और कछुए की अक्लमन्दी की एक कहानी है।

यह बहुत साल पहले की बात है कि एक भैंस और एक नर गिलहरी आपस में बहुत अच्छे दोस्त थे। वे एक साथ अपना खाना इकट्ठा करते थे और एक साथ ही अपनी खेती भी किया करते थे।

पर यह नर गिलहरी बहुत चालाक था और अक्सर भैंस के साथ उस काम में कोई न कोई चाल खेलता था जो वह कर नहीं सकता था।

एक बार की बात है कि उन दोनों के खेत में खेती बहुत कम हुई और नर गिलहरी के पास खाने के लिये बहुत कम गिरी[14] थी।

दूसरी तरफ भैंस को थोड़ी बहुत घास कहीं न कहीं से मिल ही जाती थी पर फिर भी वह उसको उतनी नहीं मिलती थी जितनी उसको चाहिये थी।

---

[13] Tricks for Tat – a Bantu folktale from Cameroon, West Africa. Adapted from the book : "The Orphan Girl and the Other Stories", by Offodile Buchi. 2001.

[14] Translated for the word "Nuts" – see their picture above.

सो एक दिन दोनों दोस्त खाना ढूँढने निकले। उस दिन दिन बहुत ही गरम था और उनको खाना नहीं मिल रहा था। नर गिलहरी को रात के लिये खाना चाहिये था और उसको प्यास भी लगी थी।

नर गिलहरी हमेशा से ही भैंस का दूध पीना चाहता था पर उसको पता था कि वह उसे अपना दूध नहीं पीने देगी। वे सारा दिन बाहर थे और गर्मी बहुत थी। नर गिलहरी जितना ज़्यादा भैंस के थनों की तरफ देखता उसको उतनी ही ज़्यादा प्यास लग आती।

नर गिलहरी ने देखा कि भैस के थनों में अब तक काफी दूध भर गया था। वह उसके थनों में अपना मुँह लगाने के लिये बहुत देर तक इन्तजार नहीं कर सका सो उसने भैंस का दूध पीने की एक तरकीब सोची।

वह भैंस से बोला — "मैं तुमसे शर्त लगाता हूँ कि मैं तुमसे ज़्यादा तेज़ भाग सकता हूँ।"

भैंस ने उसका मजाक बनाते हुए कहा — "इन छोटे छोटे पॉवों से? मैं तो अपनी ऑखें बन्द करके भी तुमसे ज़्यादा तेज़ भाग सकती हूँ।"

नर गिलहरी बोला — "ठीक है तो मेरी शर्त मानो और साबित कर दो कि तुम मुझसे ज़्यादा तेज़ भाग सकती हो। तुम वे दो बड़े पेड़ देख रही हो न? चलो देखते हैं कि उनमें से उस दूसरे पेड़ के पास जल्दी कौन पहुँचता है।

हम लोग जितनी तेज़ भाग सकते हैं उतनी तेज़ भागेंगे और पहिले पहले पेड़ के चारों तरफ चक्कर काटेंगे फिर दूसरे पेड़ की तरफ जायेंगे। जो भी दूसरे पेड़ तक पहले पहुँच जायेगा वही जीतेगा।"

भैंस बोली — "यह काम तो आसान है। मैं तुम्हारा स्वागत करने के लिये वहाँ मौजूद रहूँगी।"

तब भैंस ने अपना बाँया पाँव जमीन पर मारा और अपना दाँया पाँव उठा कर हिला कर दौड़ शुरू होने की घोषणा की। पर जब तक भैंस अपना दाँया पाँव जमीन पर वापस ले कर आयी नर गिलहरी तो उससे पहले ही दौड़ चुका था।

वह भैंस से ज़्यादा तेज़ था। वह सीधा पहले पेड़ के पास गया और फिर बिजली की तेज़ी से उसने उसके चारों तरफ चक्कर काटा, और वहाँ से दूसरे पेड़ की तरफ दौड़ गया।

भैंस को तो अपनी आँखों पर विश्वास ही नहीं हुआ। उसको लगा कि नर गिलहरी पेड़ के बीच से हो कर भाग गया था।

आखिर जब वह पहले पेड़ के पास पहुँची तो वह अपने सींगों के साथ उस पेड़ में फँस गयी। उसके सींगों का ज़ोर इतना ज़्यादा था कि उसके सींग पेड़ में घुस गये और इस वजह से वह पेड़ हिल गया और उसके बहुत सारे फल नीचे गिर गये।

वह चिल्लायी और जितनी ज़ोर से वह अपना सींग खींच सकती थी उसने खींचने की कोशिश तो की पर वह उन्हें उस पेड़ से बाहर खींच ही नहीं सकी।

नर गिलहरी भैंस के पास आया और उससे बोला — "मैं न कहता था कि मैं तुमसे ज़्यादा तेज़ हूँ।"

भैंस बोली — "मैं मान गयी कि तुम मुझसे ज़्यादा तेज़ भागते हो। तुम जीत गये लेकिन अब ज़रा तुम इस पेड़ से मेरा सींग निकालने में तो मेरी सहायता करो।"

नर गिलहरी ने बहुत कोशिश की पर वह भैंस का सींग उस पेड़ से निकाल ही नहीं सका। असल में तो उसने भैंस का सींग इसलिये भी नहीं निकाला क्योंकि अगर वह उसे निकाल देता तो उसका तो सारा प्लान ही गड़बड़ हो जाता।

सो उसने वहीं पास में जमीन का एक छोटा सा टुकड़ा साफ किया और लेट गया। वह भैंस के भूखे होने का इन्तजार कर रहा था।

गिरे हुए फलों की खुशबू चारों तरफ महक रही थी और भैंस उस खुशबू को सहन नहीं कर पा रही थी। उसने चारों तरफ सूँघा पर वह किसी भी फल तक नहीं पहुँच सकी।

जब नर गिलहरी अपनी भूख को और नहीं रोक सका तो वह भैंस का दूध दुहने गया। पर जैसे ही उसने भैंस के थनों को छुआ भैंस ने अपना पैर मार कर उसको पेड़ की तरफ फेंक दिया।

जब नर गिलहरी को उस पेड़ की चोट से थोड़ा होश आया तो वह भैंस से कुछ समझौता करने आया।

उसने कुछ फल उठाये और उनको भैंस की नाक के आगे घुमाते हुए बोला — "इस बात का कोई मतलब नहीं है कि हम दोनों यहाँ भूखे मरें। तुमको भी भूख लग रही है और तुम हरी घास और ये रसीले फल खाने के लिये बेचैन हो रही हो।

उधर मुझे भी भूख लग रही है पर मैं न तो घास खा सकता हूँ और न ही फल। काश ये गिरी होते तो मेरा पेट भर सकता था। पर तुम्हारे पास दूध है जो मैं पी सकता हूँ और मैं तुमको ये फल खाने को दे सकता हूँ।

जैसा कि मुझे लग रहा है कि मुझे तुम्हारी जितनी जरूरत है उससे कहीं ज़्यादा तुम्हें मेरी जरूरत है। मैं तुमको यहीं छोड़े जा रहा हूँ और मैं घर जा रहा हूँ।"

जैसे ही वह घर जाने के लिये मुड़ा उसने कुछ फल जो भैंस के पास पड़े थे उनको अपने पैर से इतनी ज़ोर से ठोकर मारी कि वे भैंस से इतनी दूर जा कर पड़े जहाँ तक वह कभी पहुँच ही नहीं सकती थी।

भैंस बोली — "क्या तुम मुझे सचमुच ही यहाँ अकेला छोड़ कर जा रहे हो?"

नर गिलहरी बोला — "देख लो।" और फिर जाने के लिये मुड़ गया।

भैंस बोली — "अच्छा अच्छा। अगर तुम मुझे खाने के लिये थोड़ी घास और फल दो तो तुम मेरा थोड़ा सा दूध पी सकते हो।"

नर गिलहरी ने भैंस के लिये थोड़ी सी ताजा घास काटी और थोड़े से पके हुए रसीले फल उठाये और उनको भैंस को खाने को दे दिये।

जब भैंस घास और फल खा रही थी तो नर गिलहरी ने उसका थोड़ा सा दूध पिया और एक बालटी भर कर घर ले जाने के लिये भी जमा कर लिया। उसके बाद वह यह कह कर घर चला गया कि अब वह उसके लिये सहायता मॉगने जा रहा था।

जब वह घर पहुँचा तो उसकी पत्नी ने उस दूध से बहुत ही स्वादिष्ट दलिया बनाया। नर गिलहरी और उसका परिवार और उनके मेहमान मिसेज़ हयीना[15] ने उस दिन बहुत अच्छे से खाना खाया।

मिसेज़ हयीना बोली — "यह तो बहुत ही अच्छा खाना था। तुमको इतना अच्छा दूध कहॉ से मिला मिसेज़ गिलहरी?"

गिलहरी बोली — "मेरे पति ले कर आये हैं। वह बहुत ही अच्छे शिकारी हैं। वह रोज नया नया खाना ले कर आते हैं। आज वह बड़ी मुश्किल से मिलने वाला भैंस का दूध ले कर आये हैं। क्या तुम सोच सकती हो कि उन्होंने उसका यह दूध कैसे दुहा?"

[15] Hyena is a tiger like animal. See its picture above.

खाना खाने के बाद गिलहरी ने थोड़ा सा दलिया मिसेज़ हयीना को उसके परिवार के खाने के लिये भी दे दिया।

जब मिसेज़ हयीना घर पहुँची तो उसने वह दलिया अपने पति को खाने के लिये दिया। हयीना को भी वह दलिया इतना अच्छा लगा कि उसने यह जानना चाहा कि उसकी पत्नी को यह दलिया कहाँ से मिला।

उसकी पत्नी ने उसको चिढ़ाया — "दूसरे लोग सारा दिन या तो शिकार करते हैं या फिर खेती करते हैं। शाम को वे अपनी पत्नियों के लिये रोज रोज नया शिकार ले कर आते हैं।

कभी वे अपने घर दलिया बनाने के लिये बहुत बढ़िया दूध ले कर आते हैं, भैंस का भी। पर तुम तो केवल घर में ही पड़े रहते हो और कुछ करते भी नहीं।

देखो यह दलिया मुझे गिलहरी ने दिया है। उसका पति अपने खेत से भैंस का दूध ले कर आया है। तुम भी खा कर देखो कितना स्वादिष्ट है यह दलिया।"

यह सुन कर हयीना चुप नहीं बैठ सका। अगले दिन मुर्गे के बाँग देने से पहले ही वह उठा और नर गिलहरी के घर पहुँच गया। उसने जा कर नर गिलहरी के घर का दरवाजा खटखटाया तो नर गिलहरी ने घर का दरवाजा खोला।

सोते हुए नर गिलहरी ने उससे पूछा — "कहो कैसे आना हुआ हयीना भाई?"

हयीना बोला — "क्या तुमको इस बात से कभी परेशानी नहीं होती कि हम लोग पड़ोसी हैं और हम लोग कोई भी काम एक साथ नहीं करते?"

दरवाजा बन्द करने के लिये उत्सुक नर गिलहरी बोला — "नहीं मुझे तो ऐसा कभी नहीं लगा।"

हयीना बोला — "रुको ज़रा। आज हम लोग अच्छे पड़ोसियों की तरह शिकार करने साथ साथ चलें?"

नर गिलहरी ने हयीना को टालने की बहुत कोशिश की। उसने कहा कि यह विचार कुछ ठीक नहीं है क्योंकि हयीना अपने ही तरीके का शिकार करना पसन्द करते हैं और गिलहरी तो शिकार करते ही नहीं।

पर जब हयीना ने बहुत ज़ोर दिया तो नर गिलहरी के पास और कोई चारा नहीं रहा और वह हयीना के साथ शिकार पर चलने को राजी हो गया।

नर गिलहरी का हयीना के साथ शिकार करना इतना ही बेकार था जितना कि भैंस के साथ शिकार करना। पर नर गिलहरी हयीना को अच्छी तरह से जानता था इसलिये वह अपने दूध लाने की जगह को उससे दूर ही रखना चाहता था।

पर वह इस बात से भी डरता था कि अगर वह भैंस से बहुत दिन तक दूर रहा तो भैंस भूख और प्यास से मर भी सकती थी। सो वह हयीना को भैंस के पास ले गया।

नर गिलहरी ने भैंस से पूछा — "कैसी हो? मैं तुम्हारे लिये सहायता ले कर आया हूँ।"

भैंस बोली — "तो तुम अपना काम जल्दी करो और मुझे यहाँ से आजाद करवाओ।"

एक दिन से ज़्यादा हो गया था और भैंस का दूध दुहा नहीं गया था। सो जैसे ही हयीना ने उसके दूध से भरे थन देखे उसके मुँह में भी पानी आने लगा।

जैसे ही नर गिलहरी भैंस को उस पेड़ से आजाद करने लगा कि हयीना ने नर गिलहरी को पकड़ लिया और उसे बाँध दिया।

भैंस ने यह सोचते हुए कि आगे क्या होने वाला है अपने खुर जमीन पर मारने शुरू कर दिये और चिल्लाना शुरू कर दिया। जब वह चिल्ला रही थी तो हयीना ने उसको दुहना शुरू कर दिया और भैंस ने उसको अपने पैर से ठोकर मारनी शुरू कर दी।

नर गिलहरी बोला — "हयीना भाई, इस तरह से काम नहीं चलेगा। इसको कुछ ताजा हरी घास और फल खाने को दो ताकि यह शान्त हो जाये। तब तुम इसका जितना चाहे दूध निकाल सकते हो।"

तुरन्त ही हयीना ने भैंस के लिये कुछ ताजा घास काटी और फल इकट्ठे किये और उसको खाने को दिये। जब भैंस उन्हें खा रही थी तो हयीना ने भी पहिले पेट भर कर उसका दूध पिया और फिर उसके दूध से अपनी बालटी भी भर ली।

नर गिलहरी बोला — "क्या यह ठीक रहेगा कि मैं तो तुमको यहॉ तक खाने के लिये ले कर आऊॅ और तुम मुझको एक मुजरिम की तरह से बॉध कर यहॉ छोड़ जाओ?"

हयीना बोला — "नहीं, ऐसा तो नहीं है पर ज़िन्दगी भी हर समय बहुत अच्छी नहीं होती गिलहरी भाई।"

नर गिलहरी बोला — "तुम ठीक कहते हो। पर अगर तुम मुझे खोल दोगे तो मैं तुम्हारी दूध की बालटी तुम्हारे घर तक ले जा सकता हूॅ। तुम्हारे जैसे अच्छे शिकारी के लिये यह ठीक नहीं है कि तुम अपना खाना अपने घर खुद ले कर जाओ।"

हयीना ने नर गिलहरी की सलाह के ऊपर कुछ विचार किया। हयीना जितना ज़्यादा उसकी सलाह पर सोच रहा था नर गिलहरी उसको अपने खोलने के लिये उतना ही उकसा रहा था।

नर गिलहरी बोला — "ज़रा सोचो, तुम्हारी इज़्ज़त कितनी बढ़ेगी जब लोग यह सुनेंगे कि तुमने अकेले ही भैंस को उसका दूध दुहने के लिये पछाड़ दिया।"

हयीना बोला — "हॉ यह तो है।"

नर गिलहरी बोला — "पर इस बात के लिये तुमको एक गवाह भी तो चाहिये न?"

नर गिलहरी की यह चाल काम कर गयी और हयीना ने उसको खोल दिया।

हयीना बोला — "यह लो यह दूध की बालटी। यह भी हो सकता है कि घर पहुँच कर मैं इसमें से थोड़ा सा दूध तुमको भी दे दूँ।"

जब दोनों हयीना के घर चले तो नर गिलहरी ने अपना चाकू लिया और हयीना की बालटी में एक छोटा सा छेद कर दिया। फिर उसने हयीना की बालटी अपनी बालटी के ऊपर रख ली। इससे हयीना की बालटी में से दूध धीरे धीरे उसकी अपनी बालटी में गिरने लगा।

वे लोग चलते रहे और जब तक वे अपने घर पहुँचे तो हयीना की बालटी का सारा दूध नर गिलहरी की बालटी में आ गया था।

जब नर गिलहरी अपने घर जाने लगा तो उसने हयीना की बालटी जिसमें अब केवल दूध के झाग ही झाग रह गये थे सँभाल कर हयीना को दे दी।

उसने हयीना से कहा — "ताजा दूध एक लड़की की तरह होता है उसकी ठीक से देखभाल करनी चाहिये नहीं तो वह मुँह बनायेगा, उफान लायेगा। इसलिये ख्याल रखना कि जब तुम घर जाओ तो तुमको कोई नमस्ते न करे वरना यह दूध झाग में बदल जायेगा।"

हयीना तो दूध पा कर बहुत ही खुश था। उसने नर गिलहरी से बालटी ले ली और उसे ले कर अपने घर चला।

जब वह अपने घर पहुँचा तो उसकी पत्नी दौड़ी दौड़ी आयी और उसको नमस्ते की और बोली — "आइये आइये । लगता है कि आज आप मेरे लिये दूध ले आये हैं।"

हयीना को उसके नमस्ते करने पर गुस्सा आ गया। वह बोला — "अरे तमने मुझको नमस्ते क्यों की? तुमको मुझे नमस्ते नहीं करनी चाहिये थी। इससे तो तुमने मेरा सारा दूध झाग में बदल दिया है। अब मैं तुमको दूध कहाँ से दूँगा तुमने तो उसको पहले ही झाग में बदल दिया।"

हयीना ने अपनी पत्नी को दूध को झाग में बदलने के लिये जिम्मेदार ठहराते हुए अपनी बालटी उलटी कर दी और उसको दिखा दिया कि उसके उसको नमस्ते करने की वजह से अब उस बालटी में केवल झाग ही थे दूध नहीं।

वह अपनी पत्नी पर बहुत गुस्सा हुआ और उनकी सारी रात एक दूसरे से बहस करते निकल गयी। जब वे लड़ते लड़ते थक गये तो हयीना लेट गया और कुछ सोचने लगा।

उसके दिमाग में एक विचार आया कि उसको भैंस के पास वापस जाना चाहिये और उस भैंस को मार देना चाहिये। सो सुबह होते ही वह वहाँ वापस गया और जा कर भैंस को मार दिया।

फिर उसने उसे काटा और उसका माँस घर ले आया। उसने उसके माँस को अपनी अँगीठी पर भूनने के लिये रख दिया।

उस दिन बाद में जब नर गिलहरी भैंस के पास उसका और दूध लेने गया तो देखा कि भैंस तो गायब थी। केवल उसका खून ही वहाँ पड़ा था। उसको तभी पता चल गया कि हयीना ने उसको मार दिया था।

गुस्सा हो कर नर गिलहरी घर वापस आ गया। घर बैठ कर वह कोई ऐसी तरकीब सोचने लगा जिससे कि वह हयीना से अपनी लूट वापस ले सके। रात को वह हयीना के घर गया और उसके घर के दरवाजे पर जा कर मरे जैसा लेट गया।

जब हयीना का बेटा रात को घर के दरवाजे का ताला लगाने गया तो उसने अपने घर के दरवाजे के पास किसी को लेटे देखा। वह डर गया और डर कर अपने पिता के पास भागा और बोला — "पिता जी, दरवाजे पर तो कोई लेटा है और वह कुछ बोलता भी नहीं है।"

वह अपने बेटे पर बहुत गुस्सा हुआ और उसको बहुत बुरा भला कहा। फिर उसने अपनी पत्नी को भेजा। वह भी दरवाजे पर आयी और उसको भी जब उस शक्ल से कोई जवाब नहीं मिला तो वह भी डर गयी और जल्दी से घर के अन्दर वापस चली गयी।

उसने अपने पति से कहा — "तुम्हारा बेटा ठीक कहता है जी। दरवाजे पर कोई है जो न तो हिलता है और न ही बोलता है।"

वह चिल्लाया — "तो मेरा भाला ले कर आओ। वहाँ पर जो कोई भी है तो उसको तो मुझे जवाब देना ही पड़ेगा।"

सो वह अपना भाला ले कर दरवाजे की तरफ उससे लड़ने के लिये चला। जब उसने अपने भाले से उसे धक्का दिया तो उसको पता चला कि वह तो नर गिलहरी था और वह तो मरे हुए का बहाना बनाये पड़ा था।

वह फिर बोला — "आज मेरा दिन अच्छा है। इसको मारने के लिये तो मुझे एक उँगली भी नहीं उठानी पड़ी।"

कह कर उसने उस नर गिलहरी को उठाया और उसको अपने घर के अन्दर ले गया। उसने उसको भी अपनी अँगीठी पर रख दिया जहाँ भैंस का माँस भुन रहा था और सोने चला गया।

जब हयीना और उसका परिवार सो गया तो नर गिलहरी उठा और भैंस का सारा माँस उठा कर अपने घर ले गया।

रात भर हयीना और उसका परिवार आग के अंगारों पर भैंस के माँस की चर्बी के गिरने की आवाज सुनता रहा। असल में उनको उस रात ठीक से नींद आयी ही नहीं।

पर वे जितनी भी देर सोये, नर गिलहरी के लिये उतनी ही देर उस भैंस का माँस वहाँ से अपने घर ले जाने के लिये काफी थी।

रात भर ठीक से न सोने की वजह से और फिर सुबह तक ज़्यादा देर तक सोने की वजह से हयीना को भैंस के माँस के सपने बहुत आये।

सो जैसे ही हयीना जागा वह माँस देखने के लिये अपनी अँगीठी के पास गया तो वहाँ तो उसकी अँगीठी खाली पड़ी थी।

यह देख कर हयीना को बहुत गुस्सा आया। पर क्योंकि वह नर गिलहरी भी वहॉ से जा चुका था तो उसको यकीन हो गया कि वह नर गिलहरी ही भैंस का सारा मॉस चुरा कर ले गया था।

सो वह भी रात को नर गिलहरी के घर के दरवाजे के सामने जा कर मरे हुए की तरह लेट गया।

जब नर गिलहरी का बेटा रात को अपने घर का दरवाजा बन्द करने गया तो वहॉ हयीना को लेटा देख कर बहुत डर गया और अपने पिता के पास भागा भागा गया।

वह डर से कॉपते हुए हकला कर बोला — "पिता जी पिता जी, दरवाजे पर तो एक बहुत बड़ा शैतान पड़ा हुआ है। वह कुछ बोलता नहीं। वह तो ऐसा लगता है... ।"

"अपने आपको सॅभालो बेटे। बताओ तो वह है क्या?"

नर गिलहरी बाहर आया तो उसको देख कर समझ गया कि वह हयीना था सो उसने अपनी पत्नी की तरफ देखा और उससे इतनी ज़ोर से बोला कि हयीना भी सुन ले — "देखो मेरा जादुई चाकू[16] लो जो अपने आप काटता है और दरवाजा खोल कर उसे बाहर फेंक दो तो वहॉ जो कुछ भी है वह उसको काट कर फेंक देगा।"

[16] Translated for the word "Matchet" – matchet is a long sword type knife used to cut grass in African countries. See its picture above.

हयीना तो यह सुनते ही बहुत डर गया और वहॉ से उठ कर अपने घर भाग गया।

किसी चालाक आदमी के लिये यही अच्छा है कि वह अपने जैसे आदमियों के साथ ही रहे ताकि जब वह मरे तो उन लोगों को पता रहे कि उसे किस तरह से गाड़ना है।

7 तालाब का रक्षक[17]

यह लोक कथा मध्य अफ्रीका के मध्य अफ्रीका देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

मध्य अफ्रीका देश में बहुत दूर एक जगह पर एक झील थी। उस झील के एक तरफ पानी को निकलने को जगह मिल गयी थी सो वहॉ से वह पानी निकल कर मैदानों की तरफ चल पड़ा था।

तंग पहाड़ी रास्तों से होता हुआ, पहाड़ियों की चोटी से नीचे गिरता हुआ, कत्थई ज़मीन और हरे घास के सपाट मैदानों से होता हुआ वह पानी तीन चट्टानों के बीच में आ कर रुक गया।

वहॉ वह नदी चारों तरफ घूमती रही ताकि वह वहॉ से निकल जाये, गोल गोल और तेज़, पर वह वहॉ से निकल ही नहीं सकी और वहॉ पर उसका एक भॅवर[18] बन गया जिसमें पानी नीचे की तरफ डूबता चला जाता है।

[17] The Guardian of the Pool (Story No 23) – a folktale from Central African Republic (CAR), Africa. Adapted from the book: "Favorite African Folktales", edited by Nelson Mandela.
Retold by Diana Pitcher in Zululand background

[18] Translated for the word "Whirlpool". Whirlpools are of several kinds. Some are big and strong and swift, while others are small, weak, and slow. See the picture of a small and slow whirlpool above.

उस भॅवर में पास में लगे पेड़ों के लाल और सुनहरी पत्ते भी डूबते चले जा रहे थे। और वे डंडियॉ भी डूबती चली जा रही थीं जो पानी के उस पार से पानी में आ गिरी थीं। और वे तितलियॉ भी जो पानी के किनारे लगे सफेद खुशबूदार फूलों पर मॅडराती थीं।

उस भॅवर की तली में एक बहुत बड़ा रुपहले रंग का पानी का अजगर[19] रहता था। वह वहॉ कुंडली मार कर बैठा रहता था।

जब सूरज निकलता तो उस सॉप की ऑखें उसकी चमकीली किरनों को देख कर झपकतीं और उसकी सुन्दर पर भयानक जीभ लपलपाती। वह रुपहला अजगर उस तालाब का चौकीदार था।

पर यह कोई मामूली अजगर नहीं था क्योंकि उसकी ठंडी भीगी खाल को केवल छूने से ही लोगों के बहुत सारे रोग और दर्द ठीक हो जाते थे। पर ठीक तो वे ही होते थे न जो उसके घर में, यानी तालाब की तली में, जा कर उसको छू कर आते थे।

एनगोसा[20] उसी तालाब के किनारे बैठी हुई थी और उस तालाब में तेज़ घूमते भॅवरों को देख रही थी। सूरज उसकी कत्थई

[19] Translated for the word “Silver Water Python”

[20] Ngosa – name of an African girl

खाल पर चमक रहा था और उसके कॉपते हुए शरीर को गरम कर रहा था।

उसकी मॉ बीमार थी, बहुत बीमार। ऐनगोसा जानती थी कि वह अगर उसके लिये कोई सहायता ले कर नहीं गयी तो वह मर जायेगी।

पर उस भॅवर की उन भयानक लहरों में से हो कर नीचे उतरना, फिर उस रुपहले अजगर को छूना, फिर उसकी काली ऑखों में देखना, और फिर उसकी लपलपाती हुई जीभ ... उफ़, धूप की गरमी से गरम होते हुए भी ऐनगोसा डर से कॉप गयी। वह बहुत डरी हुई थी। वह क्या करे।

पानी के नीचे से अजगर ने ऐनगोसा की तरफ देखा और देखा कि वह सुन्दर थी। उसने यह भी जान लिया कि वह उससे क्यों डर रही थी सो वह उसको कुछ तसल्ली देना चाहता था पर वह उसको तसल्ली कैसे दे। ऐनगोसा तो उससे बहुत दूर बैठी थी।

तभी ऐनगोसा ने अपने पीछे रोने की आवाज सुनी। उसने पीछे मुड़ कर देखा तो उसकी छोटी बहिन खेतों में से हो कर भागी चली आ रही थी।

उसने पुकारा — "ऐनगोसा, ऐनगोसा। जल्दी कर मॉ की हालत बहुत खराब है। लगता है हमारी मॉ अब मरने ही वाली है।"

यह सुन कर ऐनगोसा को अपनी मॉ की बहुत सारी बातें याद आ गयीं – कैसे उसकी मॉ उसको सहलाया करती थी और जब एक बार मगर ने उसको पानी में खींच लिया था तो कैसे वह उसके पास बैठ कर सारी सारी रात उसके लिये लोरियॉ गाया करती थी।

एक बार जब उसको बिच्छू ने काट लिया था तो कैसे वह उसके लिये कई कई मील पैदल जा कर उसके दर्द को ठीक करने के लिये लाल मूली की जड़ ले कर आयी थी।

कैसे उसकी मॉ ने एक बार एक बालों वाले बबून को खूब पीटा था जब उसने उसके छोटे भाई को चुराने की कोशिश की थी।

एक बार जब बहुत सूखा पड़ा था और सारे आदमी भूखे मर रहे थे तब कैसे उसकी मॉ ने अपना मक्का का दलिया छिप कर अपने बच्चों से बॉट कर खाया था।

यही सोचते सोचते ऐनगोसा उठी और उस भॅवर के पास जा कर रुक गयी।

अजगर ने ऐनगोसा के सामने एक बार अपनी जीभ लपलपायी और फिर शान्त हो गया। उसकी काली ऑखें बन्द थीं। ऐनगोसा ने अपना हाथ बढ़ाया और उसकी ठंडी भीगी खाल को छुआ।

फिर पानी को अपनी बॉहों और टॉगों से हटाते हुए वह पानी की सतह के ऊपर आ गयी और खेतों से हो कर अजगर की दवा वाले गुणों से अपनी मॉ को छूने के लिये अपने घर भाग गयी।

उस रात जब लाल रंग का पूनम का चॉद पहाड़ों के ऊपर निकला तो उस अजगर ने अपने रुपहले शरीर की कुंडली खोली और धीरे से पानी की सतह के ऊपर आया। और जमीन पर एक नौजवान ने कदम रखा।

उसका सुन्दर ऊॅचा सिर काले घुॅघराले बालों से ढका हुआ था। उसकी कत्थई ऑखों मे कोई डर नहीं था। उसकी बॉहें और टॉगें बहुत मजबूत थीं। वह तो एक सरदार का बेटा था।

जैसे ही वह बाहर आया उसने अपने आपको देखा और फिर धरती को देखा तो उसने देखा कि धरती कितनी अच्छी थी।

खेतों में से होते हुए वह एक आधे गोलाकार में लगी हुई झोंपड़ियों के पास आ गया। उम झोंपड़ियों के आस पास जानवर चर रहे थे। उनकी काली और सफेद खाल चॉदनी में मुलायम और रेशमी लग रही थी। एक बकरी अपने मेमने के साथ खेल रही थी।

उस नौजवान ने पुकारा — "ऐनगोसा, ऐनगोसा। तुम्हारी हिम्मत ने मुझे बचा लिया। जब पानी वाली जादूगरनी ने मेरे ऊपर अपना जादू डाला था तो मैं उस तालाब की तली में डूब गया था। उसके बाद तो हमेशा के लिये रोज मुझे उस तालाब का चौकीदार ही रहना था।

पर तुम्हारी हिम्मत की वजह से कम से कम अब मैं रात को अपना पुराना आदमी का रूप रख सकता हूॅ। रात को मैं अपने आपको उन लोगों को दिखा सकता हूॅ जो बहादुर हैं और सुन्दर हैं।

तुम यकीनन बहादुर हो जो मुझसे मेरे अजगर के रूप में मिलने आयीं। और मैं देख रहा हूँ कि तुम सुन्दर भी हो। आओ मेरे पास आओ।"

ऐनगोसा अपनी झोंपड़ी से बाहर निकली तो सरदार का बेटा सफेद, नीले और हरे चॉद पत्थर[21] की माला बन कर उसके गले में जा पड़ा। वे चॉद पत्थर एक चॉदी के तार मे पिरोये हुए थे।

अब ऐनगोसा अपना सारा दिन उस भॅवर के किनारे बैठ कर संगीत बजा कर बिताती है क्योंकि अजगर आदमियों का संगीत सुनना बहुत पसन्द करते हैं।

और रात को वह अपने चॉद पत्थरों की माला को अपने गले में पहन लेती है और सरदार के बेटे का पानी में से निकलने का इन्तजार करती है।

[21] Translated for the word "Moonstone" – Moonstone is a semi-precious srtone

8 ऐनगोम्बा और उसकी टोकरी[22]

यह लोक कथा अफ्रीका महाद्वीप के कौंगो देश की है।

एक बार की बात है कि एक दिन बहुत सुबह सुबह दिन की रोशनी फूटते ही चार छोटी लड़कियों ने एक बड़ी नदी में मछली पकड़ने जाने का प्रोग्राम बनाया।

उन चार लड़कियों में एक एनगोम्बा थी – गरीब, बीमार, घावों से भरी हुई। वह गॉव की सबसे ज़्यादा गरीब लड़की थी।

सो चारों लड़कियॉ मछली पकड़ने चलीं। पर कुछ दूर चलने के बाद ही दूसरी तीन लड़कियों ने ऐनगोम्बा से कहा — "तुम अपने घर जाओ। तुम हमारे जैसी नहीं हो।"

एनगोम्बा तुरन्त बोली — "नहीं मैं वापस नहीं जाऊॅगी। मैं भी अपनी मॉ के लिये मछली पकड़ना चाहती हूॅ।"

बाकी तीनों लड़कियॉ एक साथ बोलीं — "तुम? तुम क्या मछली पकड़ोगी? तुम तो बीमार हो। जाओ जाओ, तुम वापस घर चली जाओ।"

यह सुन कर ऐनगोम्बा की ऑखों में ऑसू आ गये पर वह चुप रही। उसने दूसरी लड़कियों को आगे आगे जाने दिया और वह झील के बराबर के रास्ते से नदी की तरफ चल दी।

---

[22] Ngomba and Her Basket – a folktale from Bakongo Tribe, Congo, Central Africa. Adapted from the book "African Folktales" by A Ceni. English Edition in 1998.

वह अपना मछली पकड़ने का प्लान छोड़ने वाली नहीं थी। वह चलती रही चलती रही जब तक कि वह बड़ी नदी के किनारे तक नहीं पहुँच गयी।

वहाँ जा कर उसने एक मछली पकड़ने वाला डंडा गाड़ा और मछली पकड़ना शुरू किया। उसने गाया —

मैं एक गरीब लड़की हूँ

जैसे ही उसने यह गाया और अपना मछली पकड़ने वाला काँटा पानी में फेंका तो तुरन्त ही एक मछली ने उसमें अपना मुँह मारा। उसने उस मछली को पकड़ कर अपनी टोकरी में रख लिया और फिर गाया —

मेरी कोई परवाह नहीं करता

यह सुन कर एक दूसरी मछली ने काँटे में अपना मुँह मारा तो उसने उसको भी अपनी टोकरी में रख लिया। उसने फिर गाया —

दूसरी लड़कियों ने कहा कि "घर जाओ"

एक और मछली ने काँटे में अपना मुँह मारा और वह मछली भी ऐनगोम्बा की टोकरी में गयी। उसने फिर गाया —

मैं बिल्कुल अकेली हूँ

और फिर एक और मछली ऐनगोम्बा की टोकरी में गयी।

जब वह इस तरह से मछलियॉ पकड़ रही थी कि तभी एक डाकू वहॉ से गुजर रहा था।

उसने उस लड़की का गीत सुना और छिप कर उसे देखने लगा कि उसने कितनी मछलियॉ पकड़ी हैं। फिर वह अपनी छिपने की जगह से बाहर निकल आया और उसके पास गया।

उसने उससे पूछा — "तुम यहॉ पर अकेली क्या कर रही हो?"

ऐनगोम्बा बोली — "क्या आपको दिखायी नहीं देता कि मैं यहॉ मछलियॉ पकड़ रही हूॅ? पर आप कौन हैं?"

डाकू ने जवाब दिया — "उफ, मैं भी क्या चीज़ हूॅ? मैं एक डाकू हूॅ और हर आदमी मुझसे डरता है।"

"ओह डाकू जी मुझे माफ करना। मैं आपसे प्रार्थना करती हूॅ कि आप मुझे मारना नहीं। मैं बीमार जरूर हूॅ पर मैं मछली पकड़ने में बहुत अच्छी हूॅ। देखिये ज़रा मैं कैसे मछली पकड़ती हूॅ।"

कह कर उसने अपना कॉटा पानी में फेंका और फिर से गाना शुरू किया —

यह आदमी मुझे मारना चाहता है

एक मछली ने उसके कॉटे में अपना मुॅह मारा और ऐनगोम्बा ने उसे तुरन्त अपनी टोकरी में रख लिया। उसने फिर गाया —

मेरी कोई परवाह नहीं करता

एक और मछली उसकी टोकरी में गयी। उसने फिर गाया —

मैं रोती हूँ और उससे दया की भीख माँगती हूँ

एक और मछली उसकी टोकरी में गयी। उसने फिर गाया

वह कहता है कि तुम्हारे ऊपर कोई दया नहीं

और एक और मछली उसकी टोकरी में गयी।

बच्ची की मछली पकड़ने की यह असाधारण योग्यता देख कर डाकू उससे बोला — "तुम डरो नहीं। अब तुम मेरे साथ आ रही हो।"

पर ऐनगोम्बा बोली — "नहीं, मैं आपके साथ नहीं आ सकती। मुझे ये मछलियाँ अपनी माँ के पास ले जानी हैं।"

डाकू बोला — "या तो तुम मेरे साथ चलो नहीं तो मैं तुमको मार डालूँगा।"

सो बच्ची ने फिर से अपना मछली पकड़ने वाला काँटा पानी में डाला और गाया —

यह डाकू मुझे मार डालने की धमकी देता है

एक मछली ने फिर से काँटे में अपना मुँह मारा और वह भी ऐनगोम्बा की टोकरी में गयी। उसने फिर गाया —

मेरी कोई परवाह नहीं करता

एक और मछली ऐनगोम्बा की टोकरी में गयी। उसने फिर गाया —

पर ये मछली मेरी मॉ के लिये छोड़ दो

और फिर एक और मछली ऐनगोम्बा की टोकरी में गयी। उसने फिर गाया —

मैं तुम्हारे लिये कुछ और मछली पकड़ दूँगी तुम देखना

और फिर एक और मछली ऐनगोम्बा की टोकरी में गयी।

डाकू ने एक बार फिर कुछ देर तक सोचा और बोला — "ठीक है, हम ये मछलियॉ तुम्हारी मॉ के पास ले चलेंगे पर उसके बाद तुम मेरे साथ चलोगी और मेरे साथ रहोगी। तुम वहॉ मेरे पास बड़ी इज़्ज़त के साथ रहोगी और फिर जब तुम बड़ी हो जाओगी तब मैं तुमसे शादी कर लूँगा।"

बच्ची को पता नहीं था कि वह क्या कहे। पर उसको उस समय लगा कि उसकी ज़िन्दगी डाकू का कहना मानने में ही सुरक्षित है सो उसने वही किया जो वह डाकू चाहता था।

उन्होंने वे मछलियॉ बच्ची की मॉ को दे दीं और वे दोनों साथ साथ डाकू के गॉव चले गये।

बाद में ऐनगोम्बा की वह भयानक बीमारी ठीक हो गयी। वह उस डाकू के घर में सुख में बड़ी होने लगी। उसको वहॉ वे सब सुख

मिले जिनका उस डाकू ने उससे वायदा किया था। समय निकलता गया। अब वह इतनी बड़ी हो गयी थी कि अब वह शादी के लायक हो गयी थी।

पर ऐनगोम्बा का उस डाकू से शादी करने का कोई इरादा नहीं था इसलिये उसने अपने आपको उससे आजाद करने का एक प्लान बनाया।

उसने अपने कुछ वफादार नौकरों को इकट्ठा किया और उनको जंगल में रोज सबसे ज़्यादा खुरदरी पाम की पत्तियॉ इकट्ठी करने के लिये भेजा। उसने उन पत्तियों को गॉव से दूर एक साफ जगह पर सुखाया।

जब उसको लगा कि उसके पास वे पत्तियॉ काफी हो गयीं तो उसने उसकी वैसी ही एक बहुत बड़ी टोकरी बनायी जैसी कि उसके पास मछली पकड़ने वाली थी।

दिन बीतते गये। डाकू को कुछ भी शक नहीं हुआ हालॉकि उसको कई बार पाम के रस की खुशबू हवा में तैरती लगी। पर उसकी यह समझ में नहीं आया कि वह खुशबू आ कहॉ से रही थी।

वह अपनी डाकू की ज़िन्दगी जीता रहा। लोगों को लूटता रहा, उनके ऊपर हमले करता रहा और उनको मारता रहा। पर साथ में वह अपनी शादी के दिन के बारे में भी बराबर सोचता रहा।

आखिर ऐनगोम्बा की टोकरी बन कर तैयार हो गयी। अब वह समय आ गया था जब ऐनगोम्बा को अपना प्लान शुरू करना था।

एक दिन सुबह को जब वह डाकू बाहर जा रहा था तो जाने से पहले वह उससे बोला — "तुम तैयार हो जाओ। हम लोग आज दोपहर को शादी कर रहे हैं।"

सो ऐनगोम्बा और उसके नौकर उस बड़ी टोकरी को एक पहाड़ की चोटी पर ले गये और वहॉ ले जा कर उसको उस चोटी के किनारे पर रख दिया।

फिर वे सब उस टोकरी में कूद कर बैठ गये और उसको हिलाने लगे जब तक वह इतनी खराब तरीके से नहीं रखी गयी कि वह एक ही झटके से नीचे खाई में गिर पड़ती।

उस टोकरी को इस तरह से रख कर उन्होंने उसको खाई में गिराया पर वह खाई में नहीं गिरी बल्कि हवा में रुक गयी जैसे हवा के छिपे हुए हाथों ने उसको रोक लिया हो।

और ऐनगोम्बा ने गाया —

ओ टोकरी घर चल, जैसा मैं कहती हूॅ

यह सुन कर वह टोकरी ऐनगेम्बा की मॉ के घर की तरफ चल दी। उसने फिर गाया —

जल्दी उड़ और मुझे यहॉ से दूर ले चल

और टोकरी जल्दी जल्दी उड़ चली। उसने फिर गाया —

बहुत दूर, जितनी तेज़ तू उड़ सकती है

और वह टोकरी बहुत तेज़ उड़ चली। उसने फिर गाया —
जल्दी, जल्दी, उस आदमी से दूर

और वह टोकरी उड़ती गयी और उड़ती गयी।

पर कुछ ऐसा हुआ कि वह टोकरी उस डाकू के सिर के ऊपर से उड़ी। वह डाकू एक पेड़ की एक शाख पर छिपा हुआ बैठा था ताकि वह किसी आने जाने वाले के ऊपर हमला कर सके।

डाकू ने ऊपर आसमान मे एक टोकरी उड़ती देखी तो उसके मुँह से निकला "ओह"।

उस टोकरी को देख कर उसने सोचा कि काश उसकी होने वाली पत्नी वहाँ उस अच्छी चीज़ को देखने के लिये होती – एक बहुत ही बड़ी टोकरी, हवा में लटकी हुई, शान्ति से जाती हुई।

उसी समय वह टोकरी थोड़ी सी नीची हुई और उसके सिर के पास से निकल गयी। उसी समय डाकू ने देखा कि उस टोकरी में तो लोग बैठे हुए थे। उसने पहचान लिया कि उन लोगों के बीच में तो उसकी होने वाली पत्नी भी बैठी थी।

यह देख कर उसको बहुत आश्चर्य हुआ। वह उसका पीछा करने के लिये एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर होता हुआ उसके पीछे पीछे चल दिया। वह जब तक चलता गया जब तक उसको दोबारा से वह टोकरी दिखायी नहीं दे गयी थी। वह ऐनगोम्बा के गॉव की तरफ जा रही थी।

इस बीच ऐनगोम्बा की टोकरी एक दो गॉव पार कर उसकी मॉ के पुराने घर के सामने जा कर रुक गयी। ऐनगोम्बा तुरन्त ही टोकरी से नीचे उतरी और जा कर अपनी मॉ से लिपट गयी।

उसकी मॉ ने पहले तो उसको पहचाना नहीं पर फिर जब उसकी ऑखों में देखा तब उसको लगा कि वह तो उसकी बीमार बेटी थी जिसको बहुत समय पहले एक डाकू अपने साथ ले गया था। वह अब कितनी बड़ी हो गयी थी और कितनी सुन्दर और तन्दुरुस्त भी।

बस तभी अपनी होने वाली पत्नी के पीछे पीछे उसके लिये चिल्लाता हुआ वह डाकू भी वहीं आ पहुँचा। वह उसको मारने की धमकी भी दे रहा था।

ऐनगोम्बा की मॉ बोली — "यह सच है कि मेरी बेटी के ऊपर तुम्हारा यह बहुत बड़ा ऐहसान है कि तुमने उसको ठीक किया है। और हम भी तुमको उसके लिये बहुत बहुत धन्यवाद देते हैं पर अगर ऐनगोम्बा तुम्हारे साथ रहना नहीं चाहती तो तुम उसको जबरदस्ती अपने पास नहीं रख सकते।"

डाकू गुस्से में भर कर बोला — "बेकार की बातें मत करो। यह लड़की मेरी है। मैने इसको ठीक किया है और यह मेरे पास ही रहने वाली है।"

मॉ ने महसूस किया कि इस जिद्दी से बात करने के लिये होशियारी से काम लेना पड़ेगा। यह ऐसे नहीं मानेगा। सो उसने ऐनगोम्बा को ले जाने के लिये उस डाकू को शाम तक इन्तजार करने

के लिये कहा और कहा कि वह शाम का खाना खा कर उसको ले जा सकता था।

इस बीच उसने अपने रसोईघर में एक गड्ढा खोदा। उस गड्ढे में उसने एक बड़ा बरतन रख दिया जिसमें वह साबुन बनाया करती थी। उसको उसने उबलते पानी से भर दिया।

फिर उसने वह गड्ढा कुछ डंडियों पत्तों और एक चटाई से ढक दिया और डाकू को शाम का खाना खाने के लिये रसोईघर में बुलाया।

अब यह सोचना तो बहुत आसान है कि यह कहानी किस तरह खत्म हुई होगी। वह डाकू उस गरम पानी से भरे बरतन में गिर गया और उबल गया।

इस कहानी से यह हम सबको यह सीख मिलती है कि तुम अगर किसी का भला करते हो तो इसका यह मतलब नहीं है कि तुम उसको अपनी इच्छाओं का दास बना लो।

9 बन्दर और खरगोश[23]

यह लोक कथा मध्य अफ्रीका के कौंगो देश में बड़े लोग अपने बच्चों को यह सिखाने के लिये सुनाते हैं कि उनको भी बन्दर और खरगोश की तरह से आपस में अलग अलग स्वभाव का होते हुए भी एक दूसरे को सहते हुए प्यार से रहना चाहिये।

एक बन्दर और एक खरगोश बहुत अच्छे दोस्त थे। वे अक्सर साथ रहते थे और बहुत बात करते थे। वे एक दूसरे से बात करना बहुत पसन्द करते थे और उनकी दोस्ती भी बहुत अच्छी थी सिवाय दो बातों के।

बन्दर का साथ बहुत अच्छा था। वह बहुत अच्छी कहानी सुनाता था। पेड़ पर जहॉ वह बैठता था वहॉ से वह सारे जंगल को देख सकता था। उसको यह भी पता था कि किस जानवर के साथ क्या हो रहा था और वह उसे खरगोश को बताना चाहता था।

पर उसकी एक बुरी आदत थी वह यह कि बात करते समय वह खुजलाता रहता था। कभी वह अपना सिर खुजलाता, तो कभी

[23] Monkey and Rabbit Together – a folktale from Congo, Central Africa. Adapted from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=88

वह अपना पेट खुजलाता, कभी वह अपनी बॉह खुजलाता और कभी अपना पिछवाड़ा।

इस तरह वह बात करते समय कुछ न कुछ खुजलाता रहता, और खुजलाता ही रहता। यह उसकी एक बहुत ही बुरी आदत थी और खरगोश को इस बात से बहुत परेशानी होती थी।

उधर खरगोश सारे मैदान में घूमता रहता। तो उसको हर घर में, हर घास के हर छेद में क्या होता रहता, यह सब मालूम रहता। और वह भी अपने दोस्त बन्दर से यह सब कहने के लिये बेताब रहता।

बन्दर की तरह खरगोश भी बहुत अच्छी कहानी सुनाता था पर बन्दर की तरह खरगोश की भी एक बुरी आदत थी और वह थी कि वह जब भी बात करता तो वह हमेशा हिलता रहता और इधर उधर घूमता रहता।

वह एक जगह बिना हिले बैठ ही नहीं सकता था। वह अपने कान भी हिलाता रहता। वह अपना सिर भी हमेशा हिलाता रहता क्योंकि उसको कभी आगे देखना होता था तो कभी पीछे।

पहले वह एक तरफ देखता, फिर दूसरी तरफ देखता। वह बात करते समय अपनी नाक भी सिकोड़ता रहता जैसे कुछ सूँघने की कोशिश कर रहा हो।

उसका यह बार बार हिलना बन्दर को बहुत परेशान करता। वह जब खरगोश से बात करता तो उसको खरगोश के इस हिलने से बहुत परेशानी होती।

एक दिन आखिर बन्दर से रहा नहीं गया। एक दिन जब वे बात कर रहे थे तो बन्दर बोला — "बन्द करो यह सब।"

खरगोश बोला — "क्या यह सब?"

बन्दर बोला — "यही चारों तरफ देखना और हवा में चारों तरफ सूँघना। तुम हमेशा अपने कान फड़फड़ाते रहते हो और आगे पीछे देखते रहते हो। तुम अपनी इस बुरी आदत से मुझे बहुत परेशान करते हो।"

"तुमने क्या कहा? मैं तुमको परेशान करता हूँ? और तुम तो बिना खुजलाये बात ही नहीं कर सकते हो। ज़रा अपनी तरफ तो देखो। तुम्हारी भी तो खुजलाने की बुरी आदत है।

तुम तो हमेशा ही खुजलाते रहते हो। देखो तुम तो अभी भी खुजला रहे हो। तुम अपना सिर खुजलाते हो, तुम अपना पेट खुजलाते हो, तुम अपनी बाँहें खुजलाते हो, यहाँ तक कि तुम तो अपना पिछवाड़ा भी खुजलाते हो। तुम एक जगह बिना खुजलाये बैठ ही नहीं सकते।"

बन्दर बोला — "मैं जब चाहूँ तब बिना हिले बैठ सकता हूँ। समझे।"

खरगोश बोला — "वह तो मैं भी बैठ सकता हूँ। मुझे हमेशा सूँघने और हिलने की जरूरत नहीं होती। मैं यह सब जब भी चाहूँ छोड़ सकता हूँ।"

तब बन्दर ने उसको एक मुकाबले के लिये कहा। वह बोला — "मैं सारा दिन बिना खुजलाये रह सकता हूँ अगर तुम बिना सूँघे और बिना हिले रहो तो। हम अभी इसी समय से अपनी बुरी आदतें छोड़ देते हैं।"

और दोनों एक दूसरे की तरफ देखते हुए दुखी से बैठ गये। बन्दर बिना खुजलाये चुपचाप बैठा रहा और खरगोश भी बिना हिले और बिना सूँघे बैठा रहा। दोनों में से कोई भी नहीं हिला।

बन्दर कुछ परेशान सा हो उठा उसकी उँगलियाँ जहाँ रखी थीं वहीं हिलने लगीं क्योंकि वह अपना सिर खुजलाना चाहता था। उसके पेट पर भी खुजली आ रही थी, उसकी बाँहों पर भी खुजली आ रही थी पर फिर भी वह चुपचाप बैठा रहा।

खरगोश भी बिना हिले बैठा था। वह अपनी नाक हिलाना चाह रहा था, हवा में सूँघना चाह रहा था कि कोई खतरा है या नहीं। वह इधर उधर यह भी देखना चाह रहा था कि कोई जंगली जानवर शिकार तो नहीं कर रहा था।

पर उसके बाद खरगोश ने बिल्कुल भी नहीं सूँघा और वह हिला भी नहीं।

आखिर खरगोश बोला — "बन्दर भाई मुझे एक विचार आया है। जब तक हम यहॉ अपनी बुरी आदतों को छोड़ कर बैठे हुए हैं तब तक हम एक दूसरे से कहानी ही क्यों न कहें ताकि हमारा दिन जल्दी कट जाये।"

बन्दर बोला — "यह तो बड़ा अच्छा विचार है। तो चलो तो पहली कहानी तुम सुनाओ।"

खरगोश बोला — "मैं एक बार तुमसे मिलने के लिये आने के लिये घास में से गुजर रहा था तो मैंने घास को सूँघा। मुझे पता चला कि घास में एक शेर था। मैं वहीं का वहीं रुक गया। पहले मैंने अपने बॉयी तरफ देखा फिर मैंने अपनी दॉयी तरफ देखा।

फिर मैंने हवा में सूँघा कि देखूँ कि शेर की खुशबू हवा में भी है या नहीं। फिर मैंने अपने कान हिलाये और सुनने की कोशिश की कि वहॉ शेर था कि नहीं।

पर वहॉ तो कोई शेर नहीं था सो फिर मैं नदी की तरफ चला जहॉ मुझे तुम मिल गये और फिर हम लोगों ने खूब बातें कीं।"

इसके बाद वह फिर से चुपचाप बैठ गया। पर इस बीच बन्दर ने देख लिया कि कहानी सुनाते समय खरगोश हिला भी, उसने सूँघा भी और इधर उधर देखा भी। सो बन्दर ने भी कुछ ऐसी ही कहानी सुनाने का विचार किया।

अब बन्दर ने अपनी कहानी शुरू की — "कल जब मैं नदी के किनारे की तरफ जा रहा था तो रास्ते में मुझे गॉव के कुछ लोग मिल

गये। उन्होंने सोचा कि मैंने उनके खेतों से उनका खाना चुराया है सो उन्होंने मेरे ऊपर पत्थर फेंकने शुरू कर दिये। एक पत्थर मेरे यहाँ लगा।"

जैसे ही उसने यह कहा तो खरगोश ने देखा कि उसने अपना सिर छुआ और वहाँ खुजलाया।

"दूसरा मुझे यहाँ लगा, फिर एक यहाँ लगा, एक यहाँ लगा।" यह सब कहते हुए उसने उन उन जगहों को छुआ जहाँ जहाँ उसको पत्थर लगे थे क्योंकि वहाँ वहाँ उसको खुजली आ रही थी और वहाँ वहाँ खुजलाया।

जब वह खुजला चुका तो वह बोला — "जब मुझे लगा कि अब सब खत्म हो गया तो फिर मैंने अपने सारे शरीर पर हाथ फेर कर देखा कि मुझे कहीं कोई चोट तो नहीं आयी थी। यह पक्का करने के बाद कि मैं बिल्कुल ठीक था मैं तुम्हारे पास चला आया।"

यह सुन कर खरगोश मुस्कुराया और साथ में बन्दर भी। फिर उसके बाद दोनों ज़ोर से हँस पड़े। खरगोश जान गया था कि बन्दर क्या कर रहा था और बन्दर को भी पता चल गया था कि खरगोश क्या कर रहा था।

खरगोश बोला — "तुम यह मुकाबला हार गये। तुम अपनी सारी कहानी में खुजलाते रहे।"

बन्दर बोला — "और तुम भी यह मुकाबला हार गये क्योंकि तुम भी अपनी कहानी में सारा समय सूँघते रहे, हिलते रहे और कूदते रहे।"

खरगोश बोला — "मेरा ख्याल है कि हम दोनों में से कोई भी सारा दिन चुपचाप नहीं बैठ सकता। सूँघना, हिलना और कूदना यह खरगोश की आदत में है।"

बन्दर बोला — "और खुजलाना एक ऐसी चीज़ है जो बन्दर लोग करते ही हैं। सो अगर हम एक दूसरे के दोस्त बने रहना चाहते हैं तो हम लोगों को एक दूसरे की बुरी आदतों की आदत डालनी ही पड़ेगी।"

और फिर ऐसा ही हुआ। दोनों साथ साथ खुजलाते रहे, हिलते रहे, सूँघते रहे, कूदते रहे और एक दूसरे के दोस्त बने रहे।

उत्तरी अफ्रीका की लोक कथाऐं

6 countries of Northern Africa
(1) Western Sahara (2) Morocco (3) Algeria (4) Tunisia (5) Libya **(6) Egypt**
Egypt's folktales are not given here.

10 चतुर सँपेरा[24]

यह लोक कथा उत्तरी अफ्रीका के मोरक्को देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

खुदा सुलतान जादी[25] का भला करे कि एक बार उसका अपने महल में मन नहीं लग रहा था सो उसने अपने एक बाजा बजाने वाले को जिसका नाम मुहम्मद था बुलाया।

कुछ दिन उसने उस बाजा बजाने वाले के संगीत का आनन्द लिया और फिर अपने अच्छे मूड में आ गया। उसने फिर से हँसना शुरू कर दिया और सबसे हँसी मजाक करना शुरू कर दिया।

पर इस बात को बहुत दिन नहीं बीते थे कि वह अपने बाजा

बजाने वाले से थक गया और उसने उस बदकिस्मत का सिर कटवा दिया।

फिर उसने अपने हार्प[26] बजाने वाले को जिसका नाम जोसेफ था उसको बुलाया। पर कुछ दिनों में उसके हार्प का संगीत भी उसके कानों में चुभने लगा और उसने उस हार्प बजाने वाले का सिर भी कटवा दिया।

---

[24] The Clever Snake Charmer (Story No 26) – a folktale from Morocco, Northern Africa, Africa
Adapted from "Favorite African Folktales", edited by Nelson Mandela.
[It is like the Beginning story of Arabian Nights, read it here
http://sushmajee.com/shishusansar/stories-arabian-nights/prolog.htm]

[25] King Zaadee

[26] Harp is a western kind of string musical instrument – see its picture above.

और भी बहुत सारे लोग सुलतान का दिल बहलाने के लिये आये पर हर बार वह केवल कुछ ही दिनों के लिये खुश होता उसके बाद वह फिर बेचैन और गुस्सा सा हो जाता। सो वह फिर अपने सिपाहियों को बुलाता और उनके सिर काटने का हुकुम दे देता।

ये हालात इतने बिगड़े कि अब उसके राज्य में हर आदमी बैठा बैठा कॉपने लगता। हर आदमी यही सोचता कि पता नहीं कब सुलतान उसको बुला ले और फिर कुछ दिन बाद उसको तलवार से मारने का हुकुम दे दे।

जल्दी ही हर आदमी उस सुलतान के शहर को छोड़ छोड़ कर जाने लगा — कहानी कहने वाले, गाने बजाने वाले, नाचने वाले, मदारी आदि आदि।

लेकिन एक सुबह सेल्हम[27] नाम का एक सॅपेरा महल में आया और उसने बड़ी बहादुरी से यह ऐलान किया कि वह सुलतान का दिल बहलायेगा।

सुलतान के नौकर उसको सुलतान के पास ले आये। सुलतान ने भी उस सॅपेरे की तरफ बड़े शौक से देखा जो अपनी बॉसुरी की धुन पर सॉपों को खिलाता था। वह जब बॉसुरी बजाता था तो वे सॉप उसके थैले, टॉगें और गरदन के चारों तरफ लिपट जाते थे।

[27] Selham – the name of a Muslim snake charmer

उसने भी कुछ दिन सुलतान का दिल बहलाया पर बहुत दिन बीतने से पहले ही सुलतान का उससे भी दिल भर गया। वह अब उस सँपेरे को साँपों के साथ खेलते देखना नहीं चाहता था।

उस शाम सेल्हम जब अपनी बाँसुरी बजाने बैठा और उसके साँप इधर उधर घूमने लगे तो सुलतान बोला — "दोस्त, अब तुम्हारी यह बाँसुरी और तुम्हारे ये साँप काफी हो गये अब मैं अपने नौकरों को तुम्हारा सिर काटने का हुकुम दूँगा।"

सेल्हम डर कर बोला — "जहाँपनाह, जैसे आपकी मरजी होगी वैसा ही होगा। पर आप मुझे एक मौका और दें। अगर आप मुझे एक मौका और देंगे तो यह आप ही के भले के लिये होगा।"

सुलतान ने कहा — "ठीक है। मैं खुशी से तुमको एक मौका और दूँगा पर तुमको यह मौका मुझसे लेना पड़ेगा। तुमको यह मौका तब मिलेगा जब तुम कल मेरे सामने एक सवार और एक पैदल दोनों के रूप में एक साथ आओगे।

यह मेरा हुकुम है। और जो मेरा हुकुम नहीं मानते मैं उनको तलवार से मरवा दिया करता हूँ।"

सेल्हम ने सुलतान को सिर झुकाया और चला गया। अगले दिन सुबह सवेरे उस सँपेरे को देखने से पहले सुलतान अपने छत पर खड़ा हुआ था।

जब महल के दरवाजे खुले तो सुलतान की आँखें तो फटी की फटी रह गयीं। वह कुछ बोल ही नहीं सका। सेल्हम एक बहुत ही

छोटे से गधे पर चढ़ा दरवाजे में से हो कर अन्दर आ रहा था। इतना छोटा गधा सुलतान ने पहले कभी नहीं देखा था।

यह गधा इतना छोटा था कि कि सेल्हम के उस पर बैठने के बावजूद उसके दोनों पैर जमीन को छू रहे थे। सो जब वह सुलतान के सामने आया तो वह एक सवार भी था क्योंकि वह गधे पर सवार था और वह एक पैदल चलने वाला भी था क्योंकि उसके दोनों पैर जमीन से छू रहे थे।

सुलतान यह देख कर बहुत खुश हुआ और बोला — "बहुत अच्छे। तुमने वही किया जो तुम्हें करना था। पर अभी तुमने अपना काम पूरा नहीं किया है।

अगर तुम यह चाहते हो कि मैं तुमको तलवार वाले आदमी के हवाले न करूँ तो तुमको मेरे तीन सवालों के जवाब भी देने होंगे। मेरा पहला सवाल है – आसमान में कितने तारे हैं?"

सँपेरा बोला — "जहाँपनाह, आसमान में उतने ही तारे हैं जितने कि मेरे गधे के शरीर पर बाल हैं, उसकी पूँछ के बालों को छोड़ कर। आप चाहें तो गिन सकते हैं।"

सुलतान उसकी तारीफ करते हुए बोला — "बहुत अच्छे। अब मेरा दूसरा सवाल है – हम धरती के कौन से हिस्से में हैं?"

सँपेरा बोला — "हम लोग धरती के बीच के हिस्से में है जहाँपनाह।"

यह सुन कर सुलतान फिर हॅस दिया और फिर बोला — "मेरा तीसरा और आखिरी सवाल। मेरी दाढ़ी में कितने बाल हैं?"

सॅपेरा बोला — "आपकी दाढ़ी में उतने ही बाल हैं जितने बाल मेरे गधे की पूॅछ में हैं। आप अपनी दाढ़ी कटवा दें और मैं अपने गधे की पूॅछ कटवा देता हूॅ फिर हम उनको साथ साथ गिन सकते हैं।"

आखीर में सुलतान बोला — "नहीं नहीं, इसकी कोई जरूरत नहीं। तुम बहुत चतुर हो। ऐसा कोई सवाल नहीं जिसका जवाब तुम नहीं दे सकते।"

उसने अपने एक दरबारी को बुलाया और उसको कुछ लाने के लिये कहा। कुछ ही देर में दरबारी वापस आया और उसने सेल्हम के हाथों में सोने के सिक्कों की एक थैली रख दी।

सॅपेरे ने काफी झुक कर सुलतान को सलाम किया और बाहर खड़े अपने गधे के पास चला गया।

सुलतान एक बार फिर उस चतुर सॅपेरे को अपने महल के दरवाजे से बाहर उस गधे पर सवार होते हुए और उसी समय पैदल चलते हुए देखने के लिये अपनी छत पर गया।

सेल्हम अपने उस छोटे से गधे पर सवार होते हुए और पैदल चलते हुए अपने घर की तरफ चलता चला जा रहा था।

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

36 पुस्तकें www.Scribd.com/Sushma_gupta_1 पर उपलब्ध हैं।

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।
Write to :- E-Mail : hindifolktales@gmail.com
1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–**1**
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–**2**
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–**1**
4 रैवन की लोक कथाऐं–**1**

नीचे लिखी हुई पुस्तकें ई–मीडियम पर सोसायटी औफ फौकलोर, लन्दन, यू के, के पुस्तकालय में उपलब्ध हैं।
Write to :- E-Mail : thefolkloresociety@gmail.com
1 ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं — **10** लोक कथाऐं — सामान्य छापा, मोटा छापा दोनों में उपलब्ध
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–**1** — **45** लोक कथाऐं — सामान्य छापा, मोटा छापा दोनों में उपलब्ध

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।
To obtain them write to :- E-Mail drsapnag@yahoo.com
1 रैवन की लोक कथाऐं–**1** — इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–**1** — प्रभात प्रकाशन
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–**2** — प्रभात प्रकाशन

नीचे लिखी पुस्तकें रचनाकार डाट आर्ग पर मुफ्त उपलब्ध हैं जो टैक्स्ट टू स्पीच टैकनोलोजी के द्वारा दृष्टिबाधित लोगों द्वारा भी पढ़ी जा सकती हैं।
1 इथियोपिया की लोक कथाऐं–**1**
http://www.rachanakar.org/2017/08/1-27.html
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–**2**
http://www.rachanakar.org/2017/08/2-1.html
3 रैवन की लोक कथाऐं–**1**
http://www.rachanakar.org/2017/09/1-1.html
4 रैवन की लोक कथाऐं–**2**
http://www.rachanakar.org/2017/09/2-1.html
5 रैवन की लोक कथाऐं–**3**
http://www.rachanakar.org/2017/09/3-1-1.html
6 इटली की लोक कथाऐं–**1**
http://www.rachanakar.org/2017/09/1-1_30.html
7 इटली की लोक कथाऐं–**2**
http://www.rachanakar.org/2017/10/2-1.html

8 इटली की लोक कथाऐं–**3**
http://www.rachanakar.org/2017/10/3-1.html
9 इटली की लोक कथाऐं–**4**
http://www.rachanakar.org/2017/10/4-1.html
10 इटली की लोक कथाऐं–**5**
http://www.rachanakar.org/2017/10/5-1-italy-lokkatha-5-seb-wali-ladki.html
11 इटली की लोक कथाऐं–**6**
http://www.rachanakar.org/2017/11/6-1-italy-ki-lokkatha-billiyan.html
12 इटली की लोक कथाऐं–**7**
http://www.rachanakar.org/2017/11/7-1-italy-ki-lokkatha-kaitherine.html
12 इटली की लोक कथाऐं–**8**
http://www.rachanakar.org/2017/12/8-1-italy-ki-lokkatha-patthar-se-roti.html
13 इटली की लोक कथाऐं–**9**
http://www.rachanakar.org/2017/12/9-1-italy-ki-lok-katha-do-bahine.html
14 इटली की लोक कथाऐं–**10**
http://www.rachanakar.org/2017/12/10-1-italy-ki-lok-katha-teen-santre.html
15 ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं
http://www.rachanakar.org/2018/05/blog-post_54.html
16 चालाक ईकटोमी
http://www.rachanakar.org/2018/05/blog-post_88.html

नीचे लिखी पुस्तकें जुगरनौट डाट इन पर उपलब्ध हैं
https://www.juggernaut.in/authors/2a174f5d78c04264af63d44ed9735596
1 सोने की लीद करने वाला घोड़ा और अन्य अफ्रीकी लोक कथाऐं
2 असन्तुष्ट लड़की और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
3 रैवन आग कैसे लेकर आया और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
4 रैवन ने शादी की और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
5 कौआ दिन लेकर आया और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated on May 27, 2018

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाऐं सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक **1200** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
मई **2018**